भूमिका

पाठकवृन्द ! यह चन्दन बाला चरित्र उन्हीं सुप्रसिद्ध कविवर लाला किशनलाल जी का लिखा हुआ है जिन्होंने समन्तभद्र चरित्र, पार्श्वनाथ कीर्तन, अनन्तमती चरित्र, मनोवती सुखमाल चरित्र, महावीर-कीर्तन, किशन जैन भजनावली, भक्तामर चरित्र, महावीर जन्मोत्सव आदि की रचना की है। इसमें आपने हृदय को हिला देने वाले किस मार्मिक ढंग से सती चन्दन बाला के पिता की, माता की मृत्यु, चन्दनबाला का वेश्या के यहां वेचा जाना, सती के प्रभाव को देखकर धनवाह सेठ वैश्या से धन देकर धर्म की बेटी मान कर घर ले जाना। सेठ की सेठानी मूला का सन्देह करना सेठ का बाहर जाना। सेठानी का सती को मार लगाना, तहखाने में बन्द करना, उड़द के छिलके खाने को देना, सिर का मुड़वाना यह दर्दभरी कथा पढ़ने से ही सम्बन्ध रखती है। तीसरे दिन भगवान् महावीर आहार के लिये आये सती के बन्धन टूट गये भगवान को आहार दिया फिर जंगल में जा जिनेन्द्री दीक्षा ले ली।

कविवर का जन्म देहली के निकट जारचा ग्राम में ला० मुसद्दीलाल जी के यहाँ विक्रम सं० १६४० आसोज बदी ६ को हुआ। आप ४७ वर्ष की आयु में देहली आये। बूरा का कारबार किया। अपनी सचाई तथा लोक-प्रिय रचना के कारण आप सर्व प्रसिद्ध हो गये। अनेक जगह निमन्त्रण पा निःस्वार्थ भाव से धर्म प्रभावना के हित गये। बड़े सरल प्रकृती के मधुर भाषी व्यक्ती हैं। आशा है पाठकवर्ग ज्यादा से ज्यादा इसका कीर्तन कर के व कराके धर्म प्रचार करेंगे। पुण्य के भागी होंगे।

श्रीमहावीरजी
२२—११—५७

निवेदक—
मंगलसैन जैन विशारद
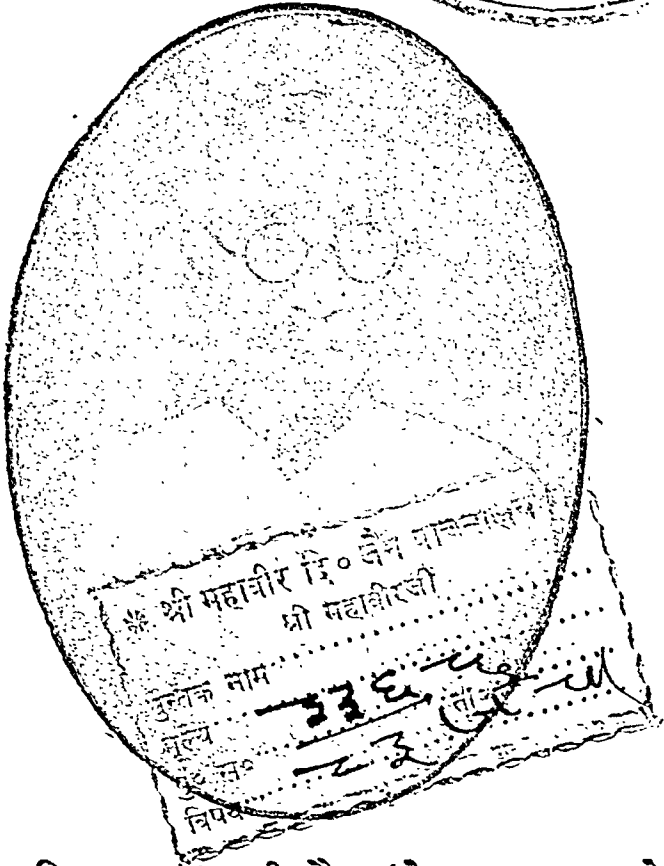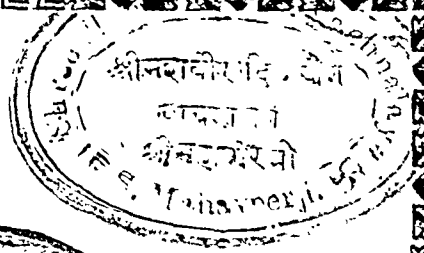
ला० किशनलाल जी जैन 'सेवक' बूरा वाले

धर्मपुरा, देहली।
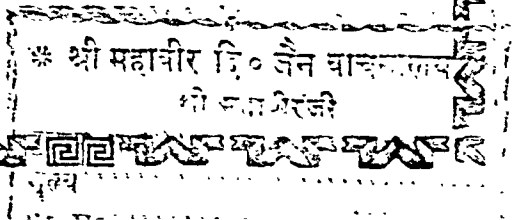
श्रीमहावीरायनमः

श्री सती चंदनबाला चरित्र

महावीर स्वामी का द्वितीय आहार

❋ मंगलाचरण ❋

दोहा—वीर प्रभु महावीर जी, स्वामी श्री अतिवीर ।
वर्द्धमान भगवान जी, बंदू सन्मत वीर ॥
पूजूं श्री अरिहंत को, सिद्धन शीस नवाय ।
सर्व साधु आचार्य, उपाध्याय मन लाय ॥
जिनवाणी गुण की भरी, सदा करो कल्यान ।
सब हीं को प्रणाम हो, श्री चौबीसों भगवान् ॥
माता बहनो मिल सभी, बोलो जय जयकार ।
किशन दिगम्बर जैन की, जो हो नैया पार ॥

श्री महावीर कीर्तन

कुंडलपुर के श्री महावीर, भज प्यारे तू जय महावीर।
जय महावीर जय महावीर ॥

चरण पूजें चाँदनपुर तीर, जहाँ नदी बहती गंभीर।
जय महावीर २ ॥

उस टीले की हो तसवीर, जहाँ दिया गैया ने चीर।
जय महावीर २ ॥

जहाँ-जहाँ पड़ी भक्त पर भीड़, तहाँ-तहाँ हरी हृदय की पीर
जय महावीर २ ॥

वर्द्धमान स्वामी अतिवीर, सन्मति वीर श्री महावीर।
जय महावीर २ ॥

भक्तजनों की बाँधो धीर, हो ना जाय किशन दिलगीर।
जय महावीर जय महावीर ॥

[illegible]

अव्वल से वर्णन करूँ, हुकम गुरू का पाय ॥
इतना कहना है प्रथम, सुनलो जैन समाज ।
भूल चूक की माफ हो, रखना मेरी लाज ॥

शेर

माफ कर देना जो गलती दास अपना जान कर ।
प्रेम के वशीभूत होकर लिख दिये वे ध्यान कर ॥
इस सभा की शान के लायक न मेरी शान है ।
दास हूँ सब के चरण का कुछ न मुझको ज्ञान है ।
लौ लगी है वीर स्वामी में हमारी प्रेम से ।
लिख रहा है अब किशन सच्चे हृदय और नेम से ।
बस यही है प्रार्थना कर जोड़ कर इस दास की ।
जानकर अपना निभा लेना कि जो अरदास की ।

स्तुति (कवि का भाव)

सन्मति कहाँ लगाई देर ॥ टेक

जिह्वा में रस रह्यो न स्वामी प्राण रहे हैं टेर ।
वृद्ध अवस्था भई हमारी कंठ लियो कफ घेर ॥ १ ॥
मन मंदर जाके घट माहीं ताहि न होत अंधेर ।
चरनन में नित ध्यान हमारो रात दिना रह्यो हेर ॥२॥
महिमा तुमरी केहि विधि बरणूं पड़ो समय को फेर ।
आज लाज रख लो मंदिर में चाँदनपुर के शेर ॥३॥
सत्य प्रेम की आज सभा में कविध करूँ बखेर ।
किशन जैन बूरा वाले की स्वामी विपति निवेर ॥४॥
सन्मत कहाँ लगाई देर ॥५॥

श्री सती चंदनबाला चरित्र

स्तुति

दोहा—कथा सुनो सब प्रेम से, होकर के निर्भय ।
एक बार मिल बोलिये, वीर प्रभू की जय ॥
चौबीसों जिनराज को, बंदू बारम्बार ।
चरण कमल हिरदे धरूँ, भरो ज्ञान भंडार ॥

चौबोला

भरो ज्ञान भण्डार प्रभू जी शरण आपकी आया ।
अद्भुत जोत जगत में स्वामी पार नहीं कुछ पाया ॥
जिसने ध्यान धरा है चित से उसको पार लगाया ।
भेद अभेद तुम्हारा स्वामी जान सके को माया ॥

मैदान

डोर चरणों में तेरे जी, काट दो संकट मेरे जी ।
तुम्हीं सब दुःख मिटाओ ।
जैन किशन को भवसागर से तुम ही पार लगाओ ॥

दोहा—अंतिम चौथे काल में, हुए वीर भगवान।
तीस वर्ष की आयु में, हुआ वीर को ज्ञान॥

चौबोला

हुआ वीर को ज्ञान जभी दिक्षा धारण कर धाये।
लोभ मोह मद क्रोध नाथ ने राज पाट विसराये॥
तप करके उपदेश किया था सब के दुख मिटाये।
जीवों के बलिदान मिटाकर दया भाव दरसाये॥

मैदान

सभी में प्रेम समाया जी, पाप का नाम मिटाया जी।
चैन भारत में छाया।
किशन जैन बूरा वाले ने चरित्र बनाकर गाया॥

दोहा—वीर प्रभु के समय में, था कौशाम्बी ग्राम।
दधिवाहन राजा हुए, दया धर्म के धाम॥

चौबोला

दया धर्म और न्याय देश में यश था उनका छाया।
प्रियधारिणी राणी सुन्दर थी मोरण सी काया॥
उसकी पुत्री चंदनबाला जिन सब धर्म दिखाया।
शतानीक राजा अभिमानी उसी समय चढ़ आया॥

मैदान

लड़ा सेना के बल से जी, आनकर भारी छल से जी।

राज को छीना आकर।

किशन जैन न्यूं कहै कथा सब सुनलो ध्यान लगाकर।

दोहा—दधिवाहन को मारकर, बन बैठा सरदार।

दो प्राणी बाकी रहे, जिनका हैं विस्तार॥

चौबोला

शतानीक राजा का जो वो सेनापती कहाया।

प्रिय धारणी से छल करने वो महलों में आया॥

खड़ा चौक में आन बड़ा रो रो कर नीर बहाया।

हाय हाय कर दधिवाहन राजा का सुयश मनाया॥

मैदान

कहाँ मेरे अनदाता जी, रची किस भाँति विधाताजी।

मुझे क्यों इकला छोड़ा

सेनापती बनाकर मुझ से कैसे नाता तोड़ा॥

दोहा—अब रानी रोवे मती, पछताये क्या होय।

हम तुम तीनों रह गये, साथी रहा न कोय॥

चौबोला

रहा न साथी कोय जगत में हो गया मर्ण हमारा ।
शतानीक राजा ने छल से तेरे पती को मारा ॥
महलों में आने वाला है वो पापी हत्यारा ।
बुरी दशा वो करे आपकी किसका यहाँ सहारा ॥

मैदान

चलो अब संग मेरे जी, विपत ने तुमको घेरा जी ।
पार अब मैं ही निभाऊँ ।
चलो यहाँ से भाग तुम्हारी प्यारी जान बचाऊँ ॥

दोहा—छल बल कुछ जाना नहीं, थी रानी मन साफ ।
सेनापति के हृदय में, बसा हुआ था पाप ॥

चौबोला

बसा हुआ था पाप आप संग ले दोनों को धाया ।
सारे दिनभर चले किसी वनखंडमें दिन छुपआया ॥
बीयाबान जंगल में आकर बिस्तर वहीं जमाया ।
सती चंदना बाला को निद्रा ने आय सताया ॥

मैदान

बेसुरत गाफिल होकर जी । सोगई पैर फैला कर जी ।
कहे सेनापती बैना ।
कहो धारणी रानी अब तो ज़रा खोल दो नैना ॥

सेनापति का प्रश्न

दोहा–सुनियो रानी धारनी, जरा लगा कर कान।
हम तुम दोनों हैं कहाँ, कौन है यह स्थान॥

रानी का उत्तर

दोहा–ये जंगल बियावान है, बन खंड बिकट उजाड़।
बड़े भयानकवान हैं, ऊँचे यहाँ पहाड़॥

सेनापति का प्रश्न

दोहा–कौन काज रानी तुम्हें, लाया यहाँ लिवाय।
क्या कुछ आई ध्यान में, दीजे जरा बताय॥

(बहर तवील)

ये बतादे मुझे रानी मैं कौन हूँ।
नाम मेरा बतादे कि मैं जौन हूँ॥
ये भी बतला मैं जंगल में लाया हूँ क्यों।
तुमने मुझको अभी तक पिछाना नहीं॥

रानी का जवाब (बहर तवील)

मेरे स्वामी के हो आप सेनापती।
हो समझदार अच्छी तुम्हारी मती॥
हमको संकट न होने दिया एक रती।
कैसे कहते हो कि तुमने जाना नहीं॥

सेनापति का जवाब (बहर तवील)

ये न जाना कि क्यों तुमको लाया यहाँ ।
दुःख होता कि या सुख होता वहाँ ॥
संग रहता मैं तेरे तू जाती कहाँ ।
मुझको तेरे बिना अन्न खाना नहीं ॥

जवाब रानी का

ये प्रगट हो रहा आपकी बात से ।
कष्ट सहना पड़ा तुमको संग साथ से ॥
लाये हमको बचा दुष्ट के हाथ से ।
सर हमारा था तुमको कटाना नहीं ॥

सेनापति का प्रश्न

प्यारी अब तक ना जानी मेरी बात को ।
क्यों अमादा हुआ मैं तेरे साथ को ॥
ठहरे वन बीच क्यों आनकर रात को ।
मेरे घर था क्या तुमको ठिकाना नहीं ॥

रानी का जवाब

आप रक्षक हो सेनापती धर्म के ।
लाज के काज के आज के मर्म के ॥

मान के प्रान के जान के शर्म के ।

तुमसे आता कभी दिल दुखाना नहीं ॥

सेनापती का जवाब

ना मैं तेरे पती का हूँ सेनापती ।

मुझको रक्षक भी अपना तू जाने मती ॥

तेरे कारन हुई ये पती की गती ।

अबतो मर कर दुबारा वो आना नहीं ॥

रानी का जवाब

ये क्या तुमने कहा ऐसी मतना कहो ।

मेरे कारण ही तो आप संकट सहो ॥

तुम जो सेनापती भी पती के न हो ।

फिर कहो कौन हो अब छुपाना नहीं ॥

सेनापती का जवाब

मैं शतानीक का ही हूँ सेनापती ।

तेरे कारण पती की करी बेगती ॥

जङ्ग मैंने ही करवाया धारणवती ।

तूने अब तक भी मुझको पिछाना नहीं ॥

अब तो स्त्री ही बन करके रहना तुझे ।

ये दुख-सुख सभी साथ सहना तुझे ॥

अब तो लाज़िम नहीं कुछ भी कहना तुझे।
कोई तेरे लिए अब ठिकाना नहीं ॥

जवाब रानी धारिणी का

तू तो पापी महानीच चण्डाल है।
मुझ पतो धर्म का कुछ नहीं ख्याल है ॥
मैं तो जाने थी करता प्रतिपाल है।
धर्म कम्बख्त अब भी घटाना नहीं ॥
तैंने मेरे पती को जो मरवा दिया।
रांड करके बता तूने क्या ले लिया ॥
नर्क का ही तो सामान तूने किया।
इस पतीव्रत नारी को पाना नहीं ॥
अब भी समझाती हूँ मैं जरा ख्यालकर।
कर रहम तू हमारे जरा हाल पर ॥
मत चले मूर्ख अब तू बुरी चाल पर।
किसी बेकस को फिर अब सताना नहीं ॥
दोहा—तू पापी लम्पट नीच नजर में आया।
जो दुखियां को दुख देने वन में लाया ॥

ख्याल

मरवा कर मेरा पती राज छिनवाया ।
कम्बख्त बता क्या तेरे हाथ में आया ॥
अब जा अपने घर बैठ बिघन करवाया ।
मुझ पतिव्रता नारी को आन सताया ॥

जवाब सेनापति का

क्यों प्यारी ऐसी कड़वी बात बनाओ ।
पापी लम्पट क्यों नीच मुझे बतलाओ ॥
मैं खोदूं तुम पर जान मान मत लाओ ।
घुड़की दे दे कर प्यारी ना तरसाओ ॥
क्यों जले हुए पर प्यारी नमक लगाओ ।
अब चुपकी होकर मुझ से प्रीत बढ़ाओ ॥

जवाब रानी का (बहर तवोल)

तूने अच्छा किया या बुरा ही किया ।
ये हमारे ही कर्मों ने बदला लिया ॥
कष्ट इतना जो लाकर के तूने दिया ।
जा चला जा शकल अब दिखाना नहीं ॥

जवाब सेनापति का

लाख कहती रहो अब क्या मानूंगा मैं ।
सर हथेली पे है मरना ठानूंगा मैं ॥

खून में हाथ अपने तो सानूंगा मैं।
अब लगा करके मन को हटाना नहीं ॥
जान जाने की परवाह नहीं है मुझे।
रानी अब क्या कहीं जाने दूँ मैं तुझे ॥
आग दिल की अभी कोई दम में बुझे।
घुड़की दे देकर हमको डराना नहीं ॥

कवि का कथन

दोहा—सुनकर रानी धारनी, सेनापती के बैन।
थर-थर-थर काँपन लगी, मूँद के अपने नैन ॥

ख्याल

नीर भरा नैनों के अन्दर टप-टप आँसू जारी है।
देदे हाथ जमीं पर मारे सोच हुआ अति भारी है ॥
पाप कौनसा उदय हुआ जो ऐसी दशा हमारी है।
हे भगवान सहाई करना अब तो आस तुम्हारी है ॥
धीर धर्म ने आकर बाँधी धर्म की महिमा न्यारी है।
सोच समझकर खड़ी हुई और दिल में यही विचारी है ॥
मौका पाकर के रानी की हिम्मत हुई करारी है।
सेनापती की खेंच कटारी अपने हाथ सँभारी है ॥

कितने टुकड़े करूँ बतादे मेरे हाथ कटारी है।
क्षत्रानी क्षत्री की बेटी क्षत्री जात हमारी है।।
जैन धर्म का पालन करती येही एक लाचारी है।
जा तुझको अब क्या मारूँगी नर की हत्या भारी है।।

कवि का कथन

दोहा–इतनी कह कर नार ने, सोचा यही उपाय।
धर्म रहे कायम मेरा जान बला से जाय।।

मैदान

जान वला से जाय धर्म ये बार बार क्या आवेगा।
अब जीकर दुनियां के अन्दर दाग मुझे लग जावेगा।।
ये पापी चंडाल अवश्य ही मेरा सत्य डिगावेगा।
धर्म के ऊपर जान गवादूं धर्म मेरा बच जावेगा।।

प्राण से भी प्यारा शील
गजल

उसी खंजर से खुद रानी प्राण अपने गवाँती है।
धर्म अपना बचाने को कटारी आप खाती है।।
बीरताई दिखाती है धर्म राह बताती है।
कटारी मार सीने में धर्म अपना बचाती है।।
करो मिल धर्म का पालन कि जो वो सबका साथी है।
किशन चूके हुवे फिर बात क्या वो हाथ आती है।।

दोहा—खेंच कटारी नार ने, की सीने में पार।
प्राण धर्म पर त्याग कर, खाकर गिरी कटार॥

तर्ज राधेश्याम

तज प्राण गिरी जब धरणी पर सेनापति थर्राया है।
कर हाय हाय का शब्द जभी एक भारी शोर मचाया है॥
सुनकर आहट चंदनबाला वो जाग उठी जो सोती थी।
करवट लेकर आँखें मलकर वो उधर मुखातिब होती थी॥
माता की हालत जब देखी सीने में लगी कटारी है।
क्यों धार खून की जारी है तब धरके कूक पुकारी है॥
माता माता माता कह कर धरनी में पटकी खाई है।
एक मार दुहत्तड़ छाती में रो रो जल धार बहाई है॥

चंदनबाला का रुदन

वन खंड में माता कैसे तजे हैं प्रान।
राज पाठ सब छिना हमारा गई पिता की जान॥
घर से चले विपत के मारे आन पड़े हैं बियाबान।
दुश्मन कौन वनों में आया दिल पर ऐसी ठान॥
हत्यारे ने दुखियाओं को यहाँ भी सताया आन।
सेना पती पिता का प्यारा है ये रक्षावान॥

शतानीक से लाया बचाकर भूलूं नहीं अहसान ।
माता पिता गये अब दोनों आप स्वर्ग स्थान ॥
मुझ दुखिया को पार लगावें वोही वीर भगवान ॥

सती का वियोग (गजल)

आज दुखिया पै संकट पड़ा है ।
काल सर पर ही आकर खड़ा है ॥
बन में साथी न कोई हमारा ।
वीर स्वामी का है बस सहारा ॥
कौन माता का बैरी अड़ा है ।
आज दुखिया पै संकट पड़ा है ॥
किस से फरियाद अब मैं करूँगी ।
खाके मैं भी कटारी मरूँगी ॥
सोच ये भी किशन को बड़ा है ।
आज दुखिया पै संकट पड़ा है ॥

जवाब चदनबाला का सेनापति से.

दोहा—धर्म पिता सेनापती, हो तुम रक्षाकार ।
सच्ची मुझे बताइये, कौन गया है मार ॥

तर्ज—राधेश्याम

किसने माता के मारा है सीने में घुसा कटारा है ।
इस बियाबान बनखंड बीच क्या आया काल हमारा है ॥

तुमरी रक्षा में कसर नहीं इतना ही बड़ा सहारा है।
मुझ अबला का अब कोई नहीं इस वनमें तुही हमारा है॥
अब मारो चाहे छोड़ो मुझको पर एक अर्ज तो मेरी है।
सत धर्म हमारा बचा रहे ये ही रक्षा बहुतेरी है॥
खाने-पीने का सोच नहीं और सोच न कपड़े गहने का।
है सोच धर्म के जाने का ना सोच मुसीबत सहने का॥

सेनापति का जवाब

दोहा—बेटी मर जाता अभी, खाकर यहीं कटार।
जग में फिर हो जायगी, तेरी मिट्टी ख्वार॥

तर्ज—राधेश्याम

पुत्री मुझसे कुछ बन सका नहीं बेखबर जमीपर सोता था।
बेसुरत नींद के दरिया में ही पड़ा खा रहा गोता था॥
माता तेरी जब पृथ्वी पर बेहोशी में एक बार गिरी।
पटकी खाने का खुड़का सुन मेरी भी एकदम नींद फिरी॥
मैंने देखा तो मरी पड़ी सीने में कटारी लगी हुई।
रोने के सिवा न कुछ सूझी ये आहोजारी लगी हुई॥
मेरी ही कटारी लेकरके कोई जालिम जुल्म गुजार गया।
पर मुझे नहीं दीखा कोई अहसान किया बेकार गया॥

कातिल जो नजर में आजाता तो उसे कत्ल कर देता मैं ।
चाहे जान मेरी जाती रहती पर बदला तो लेलेता मैं ॥
अब धीरज धर अपने मन में माता का सब्र करो बेटी ।
उठ चलो यहाँ से अब घर को तक़दीर बड़ी तेरी हेटी ॥
रक्षा जो कुछ मुझसे होगी जीते जी पर्ण निभाऊँगा ।
अब तुझे छोड़कर के बेटी कहिं एक मिनट ना जाऊँगा ॥
पहले अब अपनी माताकी तुम फिकर करो उठवाने की ।
बनको लकड़ी चुनकर लाऊँ है मेरी सलाह जलाने की ॥
इस तरह ल्हासको ना छोड़ूँ मैं अजल मजल पहुँचाऊँगा ।
जब हम तुम यहाँ से संग चलें पहले मैं चिता बनाऊँगा ॥

कवि का कथन

दोहा—बनकी लकड़ी लायकर, दीनो चिता बनाय ।
रानी को बियावान में, जब दीना फुकवाय ॥

तर्ज—राधेश्याम

दे दिया दाग जब रानी को तब चलने की ठहराई है ।
मंजिल दर मंजिल चल करके नगरी की सीम दबाई है ॥

सेनापती का जवाब

दोहा—मत बेटी घबड़ाय तू, मन मत करे उदास ।
अब तुझको पहुँचाऊँगा, एक मित्र के पास ॥

तर्ज—राधेश्याम

वो मित्र अगर मिल जावेगा तो जान तेरी बच जावेगी।
यह धर्म तेरा रह जावेगा और बात मेरी बन जावेगी॥

कवि का कथन

दोहा—बातें करते जा रहे, पहुँचे बीच बजार।
आगे आती मिल गई, एक वेश्या नार॥

तर्ज—राधेश्याम

वेश्या ने बाला को देखा और सेनापति को रोका है।
एक बात जरासी कहनेको मिल गया नार को मौका है॥

वेश्या कहती है

यह कौन कहाँ से लाये हो और कौन कहाँ को जाते हो।
मालूम हुआ है नजरों से कुछ टके उठाना चाहते हो॥
सच कहो इरादा क्या कुछ है मनका कुछ हाल बता दीजे।
जो मेरी है बेकार नजर तो अब अपना रस्ता लीजे॥

सेनापती का जवाब

दोहा—मोल अगर लेनी तुझे, दे दे चार हजार।
इससे कम होंगे नहीं, लाकर अभी सम्भार॥

तर्ज राधेश्याम

पहले मैं रकम संभालूंगा धोके का कोई काम नहीं।
चुपके से लाकर दे दीजे हमको होना बदनाम नहीं॥

जवाब वैश्या का

दोहा—रकम पेश्तर लीजिये, करती नहीं उधार।
कमरे पर दोनों चलो, लीजे रुपै संभाल॥

(बहर तवील)

चलके दूंगी वहीं तुमको सारी रकम,
पहले कमरे पै पहुँचाओ तुम कमसे कम।
अपनी सारी संभालो रकम एकदम,
मुझको देने से कोई उजर ही नहीं॥

सेनापति का जवाब

तुम ही ले जाओ दे जाओ नावां यहाँ,
मुझको मतलब नहीं जो मैं जाऊँ वहाँ।
इस बिचारी को बैठाओ चाहे जहाँ,
ऐसी बातों की इसको खबर ही नहीं॥

जवाब वेश्या का

अच्छा जाती मैं लाती हूँ पैसे अभी,
लेके अबला को जाऊँगी आकर जभी।

पहिले तेरी रकम लाके दूंगी सभी,
ले मैं जाती हूँ तुझको खबर हो नहीं ॥

जवाब चंदनबाला का सेनापति से

क्या पिताजी मुझे मोल देते हो तुम,
करके जस आज अपजस ये लेते हो तुम।
अक्ल सुन कर हुई आज मेरी ये गुम,
क्या पिताजी तुम्हें कुछ कदर ही नहीं ॥

सेनापति का जवाब

कदर बेटी तेरी ये ऐसी करे,
जाके जमना वती के तू घर सुख भरे।
बेटी बेशक चलीजा तू मतना डरे,
काम कोई भी इसके जबर है नहीं ॥

कवि का भाव (शेर)

वेश्या फौरन रक़म लाकर अदा करने लगी।
चंदनबाला सती आँखों में जल भरने लगी ॥
कंचनी से पूछती है चंदना रो रो के हाल।
पेश्तर दिल का हमारे कुछ भरम दे तू निकाल ॥

प्रश्न चंदन बाला का वेश्या से

दोहा–सुन माता जमनावती, अब तू ध्यान लगाय।
पाँच बात की अब मेरी, संशय देय मिटाय ॥

(वहर तवील)

पहले संशय मिटादे तू जमनावती,
हैं कहाँ तेरे माता पिता और पती।
जात पेशा बता झूठ कहना मती,
फिर तो जाने में कोई कसर ही नहीं॥

जवाब वेश्या का सती से

काम क्या है तुझे नाम से जात से,
क्या पिता और पती वो मेरी मात से।
मैंने देके खरीदी रकम हाथ से,
मेरे सासू सुसर का जिकर ही नहीं॥

जवाब सती का

तू ना हालत सुनावेगी जब तक मुझे,
कोई अख्त्यार होगा न बहना तुझे।
मेरे मन की ये संशय न जब तक बुझे,
तब तलक मुझको आवे सबर ही नहीं॥

जवाब वेश्या का

तुझको हालत खुलासा सुनाती बहन,
मेरी माता पिता ना संगाती सजन।

जिस किसी माल वाले से लगती लगन,
उसका छोड़ूँ मैं घर और जर ही नहीं।

सती का जवाब

मुझ से चलने को माता जी कहना मतो,
प्राण खोदेगी बाजार में ये सती।
आके दुनियां में अपनी बिगाड़ी गती,
क्या सती धर्म की कुछ खबर ही नहीं॥

जवाब वेश्या का

बस खबरदार चलना पड़ेगा अभी,
तू उजर ही न कर सकती सुन्दरि कभी।
तेरा सत धर्म देखूंगी चलके सभी,
कोई तुझको मिला है बशर ही नहीं॥

गणिका के जवाब को सुन कर सती चंदनवाला विलाप करते हुए भगवान् से प्रार्थना करती है

सोहनी

हो मेरे भगवान क्या सर पर मुसीबत आ रही।
कंचनी बाजार से जो मोल लेकर जा रही॥
मैं तो इस लायक न थी ये घर मेरे लायक न था।
अब कर्म गति की ये घटा सर पर हमारे छा रही॥

आज मेरी लाज को जगदीश आकर राखियो।
धर्म के रखते हुए भी कष्ट ऐसा पा रही॥
प्राण खोदूंगी अभी वेश्या के घर नहीं जाऊंगी।
जिन्दगी बेकार होगी ये सती बतला रही॥

कवि का

दोहा—इधर सती स्तुति करे, बेग खबर लो नाथ।
उधर वही जमनावती, लगी खेंचने हाथ॥

चौबोला

खेंच रही थी हाथ कंचनी गुस्से में भर भर के।
वैश्यां झटके नरम कलैयां ऊसर को कर करके॥
सती चंदना वीर प्रभू का ध्यान रही धर धर के।
उधर धरम अब करे सहाई कष्ट लिया हर हर के॥

मैदान

सेठ धनवाह आये जी, दुखित अबला को पाये जी।
कही वेश्या से वानी।
हाथ छोड़दे इस कन्या को चहिये नहीं सतानी॥

जवाब सेठजी का वेश्या से

दोहा—हाथ छोड़ दे तू अभी, ओ बेहूदी नार।
सता रही किस कारने, देती क्यों ललकार।

तर्ज—राधेश्याम

ललकार इसे क्यों देती है और कैसे हाथ उठाती है।
इसको किस लिए घसीट रही तू कौन कहाँ लेजाती है॥
तू जात की वेश्या नारी है यह अवला नीर वहाती है।
ना दया जरा आती तुझको ना शर्म जरा भी आती है॥
कारण इस का वतला मुझको क्यों इसी भाँति धमकाती है।
दे हाथ छोड़ इस अवला का क्यों नाहक इसे सताती है॥

जवाब वेश्या का

दोहा—वैश्यां कैसे छोड़ दूं, मैंने लीनी मोल।
तर्स तुम्हें जो आ रहा, धरदो नावां खोल॥

तर्ज—राधेश्याम

नावां जो मैंने खर्चा है वो पहले मुझको दे दीजे।
हुज्जत इसमें फिर क्या करनी मन चाहे अव तुम लेलीजे॥
दिये चार हजार रुपै मैंने कुछ मुफ्त न छीनी है।
छाती के नीचे से मैंने यह रकम लगाकर लीनी है॥
पहले घरसे मंगवाओ रकम पीछे तुम वात वनानाजी।
चुकती करके मेरा नावां फिर साथ इसे ले जानाजी॥

धनवाहन सेठ कहते हैं

दोहा—ले अपनी पूरी रकम, गिनले चार हजार ।
मैं इसको ले जाऊँगा, है यह मेरा विचार ॥

तर्ज—राधेश्याम

मेरा अब यही बिचार हुआ इसको लेकर ही जाऊंगा ।
सत धर्म बने इसका तब ही जो महलों में पहुँचाऊँगा ॥
जो इसके लायक काम काज थोड़ा-सा इसे बताऊँगा ।
अपनी तुम रकम करो चुकती इसका तो धर्म बचाऊँगा ॥

सेठजी का चंदन बाला से

दोहा–उठ बेटी चल महल को, मत कर सोच विचार ।
उदय भाग तेरे हुए, हुवा तेरा निस्तार ॥

तर्ज—राधेश्याम

महावीर प्रभू की माया है अब पड़ा धर्म से पाला है ।
हृदय दया बसी मेरे कुटनी से तुझे निकाला है ॥
अब नियमधर्म अपना बेटी हित चितसे जाकर पालो तुम ।
कुछ फिकर न मनमें करनातुम और अपनाधर्मसंभालो तुम
उठ घर को मेरे साथ चलो और चल करके स्नान करो ।
दर्शन करके जल पान करो फिर वीर प्रभु का ध्यान धरो ॥

चंदनबाला का धनवाहन से

दोहा—पिता बना सेनापती, आखिर कीनी घात ।
मुझे बेचने के लिये, वो लाया था सात ॥

सोहनी

लाया मुझे वह साथ में बनकर पिता घाती बना ।
बेच कर वेश्या के हाथों क्या मेरा साथी बना ॥
आज उस कपटी की बातें आनकर सब खुल गई ।
मार कर माता पिता को वो सगा नाती बना ॥
क्या भला होगा भलों के साथ में धोका किया ।
आज निश्चय हो गई माता पिता का अघपाती बना ॥
जो सतावेगा सती को क्या गती हो वे गती ।
ये किशन बतला रहा वो नर नरक पाती बना ॥

चंदनबाला की प्रार्थना वीर भगवान से

धन्य हो महावीर स्वामी धन्य हो,
धन्य हो अतिवीर स्वामी धन्य हो ।
जगत में महिमा तुम्हारी सार है,
जिसने हित चित से रटा वो पार है ॥
तुमने ही मुझको बचाया इस घड़ी,
कंचनी थी नाथ ये पापन बड़ी ।

इसके फंदे से निकाला आन कर,
मुझ सती अबला को दासी जानकर।
एक वो सेनापती रक्षक बना,
वो हमारे धर्म का भक्षक बना।
सेठ भी अब मोल लेकर के चला,
क्या खबर कैसी फिर आई बला॥
देखिये इस कर्म की क्या २ गती,
कष्ट ये कितने सहे चंदना सती।
बस मेरी भगवान ये अरदास है,
धर्म रह जावे यही बस आस है॥

आकाश वाणी ये हुई

सोहनी

मत सती घबड़ाय तू और मन में मत पछताय तू।
बाँध ले धीरज तू अपनी ऐसे मत कलपाय तू॥
कर्म पिछले भव में जो तूने किये अबला सती।
तुझको ही भरने पड़ेंगे दिल चाहे जहाँ जाय तू॥
अब जो तूने शीलव्रत और धर्म ये पाला सती।
याद रख भगवान् के दर्शन भी एक दिन पाय तू॥

सत्य मत नहीं त्यागियो चाहे कष्ट कितना ही भरे।
यह किशन बतलाय जग में नाम भारी पाय तू ॥

सेठजी का समझाना सती को

दोहा—मत पुत्री चिंता करे, मत दिल करे उदास।
दुख न होगा आपको, बेटी मेरे पास ॥

तर्ज—राधेश्याम

कुछ कष्ट नहीं होगा तुमको कुछ नहीं मुसीबत भरनी हो।
जो काम दासियों का मेरे वो टहल आपको करनी हो ॥
वो टहल भी ऐसी बतलाऊँ जिसमें जी खुशी तुम्हारा हो।
ना नेम धर्म में वाधा हो और घर का काम हमारा हो ॥
कुछ कमी नहीं मेरे घर में भण्डार माल के भरे हुए।
कोई पुत्र नहीं बेटी मेरे इसलिये देख कर हरे हुए ॥
ये एक हमारा प्राणी है और एक मेरे घर वाली है।
भगवान् का पूजन नित्य करे वो ही सर पर रखवाली है ॥

जवाव सती का सेठजी से

दोहा—पिता आपको वात का, है मुझको विश्वास।
एक वात मैं पूछती, जिसकी दिल में आस ॥

तर्ज राधेश्याम

कहां सेठ आपके महलोंमें किस धर्म कर्म की चाला हो।
व्योपार कौनसा करते हो किस नेम धर्म के पाला हो॥
कुछ सब्र मुझे आ जावेगा धीरज मेरी बँध जावेगी।
मर्याद धर्म को जाने से फिर जन्म! जन्म न आवेगी॥
कुछ काम काजका सोच नहीं और नहीं सोच मरजानेका।
होता है सोच बड़ा भारी जीती बाजी हर जाने का॥
मुझे माता का सोच नहीं ना सोच पिता के मरने का।
है सोच धर्म के जाने का ना सोच विपत्ती भरने का॥

जवाब सेठ जी का

दोहा—परम्परा से चल रहा, जैन दिगम्बर पंथ।
पूजन होती है सदा, देव गुरु और ग्रन्थ॥

तर्ज—राधेश्याम

मेरे ग्रंथ शास्त्र की पूजा हो और जैन धर्म का मानू हूँ।
नवकार मंत्र का ध्यान धरूँ और नियम ब्रत को जानू हूँ॥
तेरे तप में विक्षेप न हो जिनराज का पूजन नित्य करो।
सब ध्यान धर्म की महिमा है तुम इसी रास्ते कदम धरो॥
मत सोच विचार करो मनमें कुछ काम न मेरे ज्यादा है।
जो दिलमें बाकी संशय हो कहदे अब कौन इरादा है॥

जवाब सती का

दोहा—वचन सुने सब आपके, हुवा बड़ा आनन्द।
दासी अब सँग में चले, कटे हमारे फन्द ॥

तर्ज—राधेश्याम

कट गया गले का अब फन्दा चिंता चितसे सब दूर हुई।
हिरदे में प्रेम हुआ भारी ये खुशी मुझे भरपूर हुई ॥
दुःख के बंधन से छूट गई सुखकी मुझको परवाह नहीं।
जो ध्यान धर्म बन जाय मेरा तो मर जाने की आह नहीं ॥
जब तक ये श्वांस रहे तन में तब तक तो धर्म कमाऊँगी।
ना धर्म ध्यानको छोड़ूँगी और ना मन को बिसराऊँगी ॥
आगे आगे तुम चलो पिता पीछे पीछे मैं आऊँगी।
कुछ मारग ध्यान लगाऊँगी प्रभू को स्तुति सुनाऊँगी ॥

प्रार्थना चलते समय चंदनबाला की (भैरवी)

टेक—नाथलेना खबरिया हमारीये है अबला शरण में बिचारी
नेम धरम व्रत कुछ ना बनत है ना साधन ब्रह्मचारी।
ना कुछ भजन बने प्रभू मोसे दया देह बिच धारी ॥
नाथ लेना खबरिया हमारी ये है अबला शरण में बिचारी।
पूजा पाठ बने जप तप ना हम हैं दास भिखारी।
कष्ट निवारन हो दुःख टारन भगतन के हितकारी ॥
नाथ लेना खबरिया हमारी ये है अबला शरण में बिचारी।

दीनदयाल दया के सागर जग बिच महिमा न्यारी।
तुम ही ने जिन देव जगत में नैया पार उतारी ॥
नाथ लेना खबरिया हमारी ये है अबला शरण में बिचारी।
मेरी बार अबार न कीजे मैं हूँ नाथ अनारी।
किशन कहे महावीर प्रभू जी आया शरण तुम्हारी ॥
नाथ लेना खबरिया हमारी ये है अबला शरण में बिचारी।

सेठजी का चन्दनवाला को लेकर ग्राम में पहुँचना महल में जा
सेठानी से कहना

दोहा—सेठानी जी आपको, लाया रत्न अमोल।
दासी ये तेरी करे, अब खिदमत बेतोल ॥

तर्ज—राधेश्याम

ये सुन्दरी अति सुशीला है और नाम भी चंदनवाला है।
कर्मों की मारी आ पहुँची विपता ने फंदा डाला है ॥
है धर्म ध्यान में मन इसका और जैन धर्म की पाला है।
कर्मों के फ़ल से विपत पड़ी घर से इस भाँति निकाला है ॥
गणिका ने इसको मोल लई लेकर कमरे पर जाती थी।
इंकार ये जाने को करती प्रजा इसको धमकाती थी ॥
आगई दया जब हिरदे में जो मोल इसे मैं ले आया।
बच गया धर्म बेचारी का ये वीर प्रभु की है माया ॥

सेठानी कहती है

दोहा—तुम्हें सेठजी किस तरह, हुई इसकी पहचान ।
बुरी भली परदेश में, बिकी यहाँ पर आन ॥

तर्ज—राधेश्याम

गणिका के हाथ बिकी आकर तुमने क्योंकर पहचानी है ।
यह माता पिताको त्याग चली क्यों भरती फिरे हिरानी है ॥
कुछ धर्म ध्यान ना बने टहल जब ज्ञानी करे विरानी है ।
फिर भी यह मोह तोड़ आई तो कैसे भोली जानी है ॥
तुम भी तो सोचो कुछ मन में बूढ़े होने को आये हो ।
लापता जानकर अबला को क्यों संगमें अपने लाये हो ॥

सेठ जी कहते हैं

दोहा—हीरे लाल जवाहर की, जौहरी जाने सार ।
इसी तरह पहचानती, सती शील को नार ॥

तर्ज—राधेश्याम

जो सती शिरोमणि अबला हो वो नजरां में आजाती है ।
चहरे से चातुर चंचलता वो छवि आप बतलाती है ॥
गुण अवगुण सभी प्रगट होते ना छुपते कभी छुपाने से ।
ना लाल गुदड़ियों में छुपते ये पूछो जरा जमाने से ॥
गर बुरी भी हो तो क्या लेगी घरकी सब टहल बजायेगी ।
हो जाय गुजर बेचारी की और यूं ही उम्र कट जायेगी ॥

सेठानी का जवाब

दोहा—जो मंशा हो आपकी, करिये उसे जरूर ।
मुझको क्या इंकार है, नहीं आपसे दूर ॥

तर्ज—राधेश्याम

मैं दूर आपसे क्यों कर हूँ मंजूर आखिर को करनी है ।
मेरा क्या बुरी भली लेगी ये पड़े तुम्हीं को भरनी है ॥
इस जग में ऐसे भक्त भी हैं जिनके वो हाथ सुमरनी है ।
कुछ लगी हुई तो और ही है जो अन्दर पेट कतरनी है ॥
जो आप परीक्षा कर ही चुके तो फिर कहना बेकारा है ।
ये बाजे रहे सेठ तुमको नारी की माया न्यारी है ॥

जवाब सेठजी का चंदनबाला से

दोहा—चल बेटी बतलाऊँ मैं, रहने को स्थान ।
अपना सब करती रहो, खान पान और ध्यान ॥

तर्ज—राधेश्याम

सब खानपान औरध्यान इसी कमरेपर रोज बनाओ तुम ।
तेरे ही कारण बतलाया अब अच्छी मौज उड़ाओ तुम ॥
जिस वस्तु की चाहत होवे वो सेठानी से ले लेना ।
फिर भी जो तुमको नहीं मिले तो एकबार हमसे कहना ॥

तुम भजन भाव नित नियम करो मंदिरजी के दर्शन पावो।
श्रीजैन धर्म का पालन कर इस भव से वेगी तिर जावो॥

सेठानी अपनी पहली दासी से पूछती है

दोहा—दासी तू बतला मुझे, अबला है ये कौन।
आई सेठ से साथ में, साध रही है मौन॥

बहरे तवील

मौन साधी है अबला ने कैसी यहाँ,
जाके चुपचाप कमरे में बैठी वहाँ।
चित्त इसका बतादे है दासी कहाँ,
इसके चेहरे पर जरदाई छाई हुई॥
छोड़ आई है घर बार माता पिता,
फिर भी विपता बतावे रही हूँ बिता।
मेरी दासी धरम से तुही दे बता,
ये पेता ला पता है कि ब्याही हुई॥

दासी का जवाब सेठानी से

दोहा—सेठानी जी क्या कहूँ, मुझसे कही न जाय।
दुनियाँ है रंग की भरी, भेद नहीं कुछ पाय॥

बहरे तबील

इसको बदकार बेहूदी जानो मती,
मेरी नजरों में आती है सच्ची सती।
कष्ट सहनेसे ही इसकी बिगड़ी मती,
यूं हीं चेहरे पै जरदाई छाई हुई ॥
सेठ दासी बनाकर के लाये इसे,
है भली ये बुरी ना जंचे सो बिसे ॥
अपना आपा बुरा हम कहेंगी किसे,
है ये गर्दिश की खुद ही सताई हुई ॥

सेठानी दासी से कहती है

बहरे तबील

तू क्या जाने इसे बावली सुन्दरी,
है यह सौतन हमारी बड़ी मद भरी।
चाल मरदों की जाने नहीं तू मरी,
मेरी सारी नजर में समाई हुई ॥
नार नागिन है काली जहर की भरी,
इसकी फुंकार निकलेगी नीली हरी।
आह मारेगी जब तान कर बेसुरी,
फिर जिगर में बुझे ना बुझाई हुई ॥

जवाब दासी का (बहरे तवील)

ऐसी बातें सेठानी न मुख से कहो,
तुमको शोभा नहीं जो भ्रम में रहो।
ऐसी हरकत कभी सेठजी से न. हो,
जैसी दिल में तुम्हारे समाई हुई॥
है ये ज्ञानी गुणी ध्यान जिनराज में,
कुछ कमी है नहीं सेठ की लाज में।
सारा मतलब ही खुल जाय कल आज में,
अग्नि छुपती नहीं ये छुपाई हुई॥

जवाब सेठानी जी का

तू भी उनकी तरफ से उन्हीं की कहे,
उनके हरवक्त जो तू टहल में रहे।
होती उसको खबर सुख दुःख जो सहे,
है ये विरहा अगन की सताई हुई॥
मेरे पौरख थके और जवानी ढली,
मेरी वो शान शौकत गई सब चली।
उसकी उठती जवानी नई है कली,
अब तो महकार गुल में सवाई हुई॥

जवाब दासी का

दोहा—ज्यादा मैं करती नहीं, सेठानी जिदबाद ।
ये लड़की अबला सती, ना त्यागे मर्याद ॥

चौबोला

ना त्यागे मर्याद धर्म की है असल कुमारी ।
रंग ढंग और बोल चाल से लगती राजदुलारी ॥
माता पिता मरे हैं इसके सत्य सेठ कहें सारी ।
आप बड़ी हो मैं हूँ दासी करती टहल तुम्हारी ॥

मैदान

न मैं ज्यादा कह सकती जी, दिखादूं इसकी भगतीजी ।
ध्यान में इसका मन है,
भूख प्यास के कारन सारा कुमला रहा वदन है ॥

जवाब सेठानी का

दोहा—कल परसों की छोकरी, ना कुछ तुझको ज्ञान ।
इन बातों की है मुझे, वहुत वड़ी पहचान ॥

चौबोला

मुझको है पहचान उम्र है साठ साल की मेरी ।
सर के वाल सफेद हुवे देखी नारी वहुतेरी ॥

लाये इसको साथ सेठजी वहीं बना कर चेरी ।
चेरी फेरी नहीं सेठ ने गेरी मेरी ढेरी ॥

मैदान

देखना मेरा तमाशा जी, मैं कैसा डालूं रासा जी ।
इसे नहीं रहने दूंगी,
मैं विरहा में जलूं जली को ना सुख सहने दूंगी ॥

दासी का जवाब

दोहा—सेठानी और सेठ की, वन्दी तो है दास ।
दोनों से गुजरान हो, रहूँ आपके पास ॥

चौबोला

रहूं आपके पास हर घड़ी किसकी करूँ बुराई ।
दोनों की दासी मैं होकर अपनी चाहूं भलाई ॥
दिल चाहे सो कहो टहलनी आखिर मैं कहलाई ।
मेरी बात भूल मत जाना जो पहले समझाई ॥

मैदान

न हो वो झूंठी बानी जी, पड़े इक रोज बतानी जी ।
ये मैं निश्चय कहती हूँ ।
औरत मर्द मर्द सङ्ग औरत मैं भी तो रहती हूं ॥

सेठानी का जवाब

दोहा—क्या दासी तू चाहती, मालिक का नुकसान ।
रंग लगा जो सेठ को, बिगड़े सब सामान ॥

चौबोला

बिगड़े सब सामान सेठजी का जो सत डिग जावे ।
देना चाहिये साथ तुम्हीं हम मिलकर धर्म बचावें ॥
इस अबला के साथ सेठजी बात न करने पावें ।
और जो ये बातें करें आप सारी छुपकर सुन आवें ॥

मैदान

सेठ की मत बौराई जी, बुढ़ापे में क्या छाई जी ।
ख्याल ना मेरा कीना,
सुख पाने का समय हमारा दुःख सेठ ने दीना ॥

जवाब दासी का

दोहा—मुझे उजर बिल्कुल नहीं, बंदी तावेदार ।
जो कुछ सेठानी कहो, करने को तैयार ॥

चौबोला

करने को तैयार बात की राखूंगी निगरानी ।
आठ पहर नजरों में इनकी देखूं निगाह मिलानी ॥
दूंगी साथ जरूर आपका अब ये दिल पर ठानी ।
अगर सेठ नाराज हुए तो तुमको पड़े निभानी ॥

मैदान

न अब तुम कष्ट उठाओ, भ्रम को खूब मिटाओ।
न तुमसे बाहर हूँगी,
तुम भी देना साथ हमारा मैं भी संग रहूँगी ॥

सेठानी जी घर में बैठी शोक करती हैं

गजल

आज ये कौनसी गर्दिश हमारे सर पै आई है।
पती ने लाके अबला को आज पत्नी बनाई है ॥
उदय ये पाप आकर के हुआ है कौनसे भव का।
नार को नार के होते महल में ला बिठाई है ॥
अगर मतलब नहीं होता सेठ को ऐसी बातों से।
न लाते सुन्दरि ऐसी बुरी दिल में समाई है ॥
धर्म भी सेठ ने त्यागा आनकर वृद्ध अवस्था में।
ये भगती खो दई सारी उमर भर की कमाई है ॥
यहाँ धर्मात्मा कोई सेठजी से न बढ़ कर था।
मगर इस पाप ने इज्जत खाक में सब मिलाई है ॥

सेठानी मूला का अफसोस करना

गजल छोटी बहर

हाय अब किससे कहूँ मैं मर्म की।
ये गती बिगड़ी हमारे कर्म की ॥

पाप ये पहला उदय अब हो गया ।

सुख हमारे भाग का बस खो गया ॥

अब तो बचना ही मेरा दुशवार है ।

बिन पती पत्नी की मिट्टी ख्वार है ॥

खाक ये मेरे बुढ़ापे में पड़ी ।

कर्म गति की कौन सी आई घड़ी ॥

कौन अब मेरी सुने फर्याद को ।

सेठ त्यागे धर्म की मर्याद को ॥

दासी का फिर आना

दोहा—सेठानी जी सोच को, करदो दिल से दूर ।

दर्शन हेत मन्दिर में, चलना तुम्हें जरूर ॥

चौबोला

चलना तुम्हें जरूर नहीं बिन दर्शन खाना खाओ ।

वस्त्र पहन कर चलो प्रभूजी के दर्शन कर आओ ॥

सोच फिकर को दूर करो अब क्या मन में पछताओ ।

देर करो ना उट्ठो जल्दी मतना देर लगाओ ॥

मैदान

रंज बिल्कुल ना कीजे जी, वस्त्र धारन कर लीजे जी ।

मिटेगी दिल की शंका,

किशनचंद आनन्द रहो सब पूरन होगी मंशा ॥

रङ्गाचार

दोहा–वस्त्र धार कर चल पड़ी, सेठानी जब हाल।
दासी आई साथ में, मंदिर जी तत्काल ॥

चौबोला

मंदिर में तत्काल आनकर चरणों शीस नवाया।
ध्यान प्रभू का किया विधी से पढ़कर मंत्र सुनाया ॥
इधर सेठ धनवाह अपने महलों में जब आया।
सूना देखा महल सती चंदनवाला को पाया ॥

मैदान

सेठजी बोले बानी जी, कहाँ पर है सेठानी जी।
न कोई दीखे दासी,
किशनलाल कर ख्याल महल में छाई हुई उदासी ॥

रङ्गाचार

दोहा–सेठ सती से पूछते, कहां तुम्हारी मात।
उत्तर देने चंदना, खड़ी जोड़ कर हाथ ॥

जवाब सती का

दोहा–माता जी मंदिर गई, दासो को ले साथ।
दर्शन कर जिनराज के, आती होगी मात ॥

जवाब सेठ जी का

दोहा–बेटी मेरे वास्ते, गरम नीर दे लाय।
हाथ पैर मैं धोऊँगा, थकन दूर हो जाय ॥

पिताजी आप चौकी पर बैठिये दासी अभी गर्म जल भर लाती है और आपकी सेवा करती है।

सती चंदनबाला

दोहा—चरण पखारन आपके, चंदनबाला त्यार।
चौकी पर बैठो पिता, लीजे पाँव पसार॥

चौबोला

फैला लीजे पैर पिता जी चरण अभी धोती हूँ।
बने नहीं कुछ सेवा हम से उम्र मुफ्त खोती हूँ॥
लाख टहल करने पर भी मैं नहीं उऋण होती हूँ।
पूज्यनीक है चरण आपके धोय चरण छूती हूँ॥

मैदान

बड़ा अहसान किया है जी, पाप से बचा लिया है जी।
करालो अपनी सेवा,
मात पिता की सेवा ही में मिले बहुत सी मेवा॥

भजन रंगा का

जब बैठ गये चौकी पर वो धनवाहा पैर पसार॥ टेक
चौकी पर लाला पधराये। पग दोनों नीचे लटकाये॥
पीछे दोनों हाथ टिकाये, होकर मग्न अपार॥ १॥
सन्मुख चंदनबाला आई। देख सेठजी को हर्षाई।
लोटा भी जलका भर लाई, पग धोने को त्यार॥ २॥
बैठ गई आगे को आकर। चौकी पर जल रखा जाकर।

आगे को दिए हाथ बढ़ाकर, छोड़ीं जलकी धार ॥ ३ ॥
पाप नहीं दोनों के मन में। दोनों थे इकले महलन में।
किशनलाल कहे सच्चे तन में, होता नहीं विकार ॥ ४ ॥

कवि का भाव

दोहा—चंदनबाला सेठ के, चर्ण रही थी धोय।
महलों में उनके सिवा, नहीं तीसरा कोय ॥

तर्ज—आल्हा

सिवा सेठ चंदनबाला के और तीसरा कोई नाय।
बड़े प्रेम से पैर धुलावें मन में सेठ बहुत हरसाय ॥
सर के बाल गिरे पैरों में सेठ प्रेम से रहे उठाय।
हँस कर केश धरे गोदी में मन में थी शंका कुछ नांय ॥
मल मलकर चरणों को धोती चंदनबाला मैल छुटाय।
गर्म नीर से जो पग धोवे उसकी थकन दूर हो जाय ॥
जब कपड़े से पैर अंगोछे सेठानी भी पहुँची आय।
पीछे पीछे दासी आवे देखत ही मन में जल जाय ॥
वदन कांप रहा सेठानी का दासी देख गई घबड़ाय।
कदम नहीं पड़ते आगे को सारा वदन गया थर्राय ॥
दासी देखे सेठानी को गर्दन नीची रही झुकाय।
मुख से बोल नहीं निकले था चुपकी खड़ी अलहदा जाय ॥

नजर सेठ की पड़ी उधर को मन में शंका कीनी नाय ।
जिसके मन में अटक रहेगी आखिर को लटका रहजाय ॥
जिसके हिरदे पाप न होगा इस भव से वोही तर जाय ।
मंसा पाप बुरा है सबसे पापी झुर झुर कर मर जाय ॥
चौकी से जब उठे सेठजी मनमें बड़े रहे हर्षाय ।
खाना खाकर गये महल से बाजारों में पहुँचे जाया ॥
सती चंदना लोटा लेकर अपने कमरे पर चढ़ जाय ।
इधर बचन बोली सेठानी दासी सुनले कान लगाय ॥

जवाब सेठानी का दासी से

दोहा—दासी अब तो सत्य है, आँखों देखी बात ।
बड़े प्रेम से सेठ जी, सर पर फेरे हाथ ॥

(बहरे तवील)

हाथ अबला पै फेरे है किस प्रेम से,
सेठ बिचलित हुए धर्म और नेम से ।
घर में आवें विताकर इसी टेम से,
जब कि हम घर में मौजूद पाती नहीं ॥
तू बताती थी लाला हैं धर्मात्मा,
मेरी अन्दर से जाने थी सब आत्मा ।

तेरी बातें हुई आज सब खात्मा,
चापलोसी तेरी क्यों ये जाती नहीं ॥

सोमना दासी का जवाब
बहरे तवील

अब तो सेठानी इन पर क्षमा कीजिये,
अर्ज मेरी जरा फिर के सुन लीजिये ।
आप संदेह दिल से मिटा दीजिये,
पाप की कोई बातें समाती नहीं ॥
सारे दिन भर तो ये काम घर का करे,
फिर निवट काम से ध्यान अपना धरे ।
पाठ पूजा श्रीजी की नित ही करे,
टैम मंदिर का अपना उकाती नहीं ॥

जवाब सेठानी का दासी से
बहरे तवील

बस यही तो है पाखंड इस नार का,
त्रिया चरित्र दिखाना बदकार का ।
कोई पा ना सके नार की पार का,
ये छुपाती है करतब बताती नहीं ॥
सेठ आते ही घर में पुकारें इसे,

तू बता और पूछे हैं आकर किसे।
जिसकी चाहत उसे देखले सौ बिसे,
ये रसोई बिला इसके भाती नहीं ॥

जवाब दासी का

बहरे तवील

ये सिठानी जी कारण से कारण मिला,
पास भक्तों के भगती का रस आ रिला।
इसका दिल में न लाओ जरा भी गिला,
वो भी अपने धरम को डिगाती नहीं ॥
इनके हिरदे धरम का चमत्कार है,
ये सती चन्दना भी गुणाधार है।
शुद्ध गुण में सुगन्धि की महकार है,
इस वजह से विघन कोई आती नहीं ॥

जवाब सती का सेठानी से

दोहा—हाथ जोड़कर चंदना, आगे खड़ी हजूर।
माताजी क्या हो गया, मुझसे कोई कसूर ॥

चौबोला

मुझसे कोई कसूर हुआ हो उसे माफ कर देना।
मैं दासी चरनों की चेरी इतना ज्ञान हमें ना ॥

गर्दिश के चक्कर में माता स्थिर चित्त रहे ना।
कर्मों के कर्तव्य किये टाले से कभी टले ना॥

मैदान

शरण में दासी आई जी, आप अब करो सहाई जी।
टहलनी अन्त कहाऊँ,
दिया हुआ टुकड़ा माताजी आप ही का मैं खाऊं॥

जवाब सेठानी जी का

दोहा—माता माता मत करे, माता तेरी कौन।
माता तेरी थी वही, जिन जाई है जौन॥

चौबोला

जिन जाई है जौन वही माता तेरी कहलाई।
मैं तो सौतन लगू पती मेरे की तुही लुगाई॥
जैसे कर्तव्य करे आन कर सब दे रहे दिखाई।
तू सेठानी बनी महल की दासी हमें बनाई॥

मैदान

तू दिन भर हमें जलावे, मौज से मजे उड़ावे।
बने तू कैसी भोली,
देखू सब चरित्र अनोखी भोली बन कर बोली॥

जवाब चन्दनबाला का

दोहा—जननी तो जनकर मरी, पिता मरे बिन काल।
माता हो तुम धर्म की, करती हो प्रतिपाल ॥

चौबोला

करती हो प्रतिपाल हमारी माता आप कहाओ।
मुझ पुत्री को माता जी सौतन कैसे बतलाओ ॥
अब तक नहीं समझ में आई गुस्सा क्यों कर खाओ।
ऐसे कैड़े बोल मुझे माता जी मती सुनाओ ॥

मैदान

जरा तो क्षमा कीजिए जी, सोच और समझ लीजिए जी।
दोष नाहक मत दीजे,
दासी ताबेदार आपकी मन चाहे सो कीजे ॥

जवाब सेठानी का चंदनबाला से

दोहा—कैसी भोली बन रही, कुछ भी जाने नाय।
छेद किए उस थाल में, जिसमें भोजन खाय ॥

चौबोला

जिसमें भोजन खाय उसी में कीने छेद बहत्तर।
नहीं छिपाने से छुप सकते त्रिया तेरे चिलत्तर ॥
रोज़ जली को खूब जलावे मार मार कर पत्थर।
डुबा दिए पानी में उस बूढ़े ने साल सतत्तर ॥

मैदान

लुगाई बड़ी चतुर तू, गिरह सब रही कतर तू।
बात क्या खड़ी बनाती,
और नहीं छुपाने से छुपती है क्या तू ऐब छुपाती ॥

दासी का बीच में जवाब

दोहा—सेठानी जी आप से, अर्ज़ करूं कर जोड़।
अब चुपकी हो जाइए, सब बातों को छोड़ ॥

चौबोला

सब बातों को छोड़ो इसको ज्यादा तंग ना कीजे।
ये कन्या ला दोष दोष ना इसको नाहक दीजे ॥
बिगड़ जाएगी बात सेठ की फिर सारी पतछीजे।
जैसे कोई कर्म करेगा भोगे वही नतीजे ॥

मैदान

ये मानों मेरी वानी जी, समझ लो फिर सेठानी जी।
सेठ जो सुन पावेंगे,
सुन कर ऐसे बैन नैन ये सुरखी भर लावेंगे ॥

सेठानी का जवाब पहली दासी से

दोहा—क्यों पगली तू बक रही, चुप होजा चिंडाल।
सब तेरे कर्तव्य हैं, तू ही करे निहाल ॥

चौबोला

तू ही करे निहाल हाल नजरों से देखा सारा।
इस कुतिया के केश गोद में ले रहा सेठ हमारा॥
हँस हँस धोती चरण खसम से बैठी करे इशारा।
ऐसी हरकत करे सामने येही जुल्म गुजारा॥

मैदान

हमें तू सिखलाती है जी, सेठ से मिल जाती है जी।
बात सब तेरी जानी,
सुन सुन बातें सारी तेरी रंगत आज पिछानी॥

जवाब चंदनबाला का सेठानी से

दोहा—मात पिता गुरुदेव से, राग द्वेष ना वैर।
सच्चे मन से धो रही, माता जी मैं पैर॥

चौबोला

धोती थी मैं पैर पिता के ऐब नहीं कुछ कीने।
केश छिटक पृथ्वी पर आये उठा सेठ ने लीने॥
पग धोने के बाद साफ कर केश हाथ में दीने।
इतनी बातों में माताजी तुम को आये पसीने॥

मैदान

कहो जो मन में आवे जी, कौन तुमको समझावे जी।

धर्म को वीर वचावे,
निर्दोषी को दोष लगेगा ग्रन्थ यही बतलावें ॥

जवाब सेठानी का सती से

दोहा—बड़ी सती धर्मात्मा, बनकर आई नार ।
तेरी आह से देखिए, गिर ना जाय पहार ॥

चौबोला

गिर ना जाय पहाड़ कभी ये धरती फट ना जावे ।
क्रोधित होकर स्वर्ग लोक से देव नहीं भग आवे ॥
सतीपना दिखलाकर हम को तिरिया खूब जलावे ।
लाज नहीं निर्लज्जी तुझको क्या तू जीभ चलावे ॥

मैदान

देख तू मेरा तमाशा जी, करूँगी पूरा रासा जी ।
जो तैंने फंदे डाले,
देखूंगी सिंगार मैं तेरा अब तो खूब जलाले ॥

सेठ जी का आन कर सेठानी से कहना

दोहा—प्रिय आज हम जा रहे, राज काज के काम ।
दो दिन ही रहना पड़े, आऊँ तीसरी शाम ॥

चौबोला

आऊँ तीसरी शाम काम आया है बड़ा जरूरी ।

शिश माहे की माल गुजारी हमें उघानी पूरी ॥
समय टले पर टल जावेगी रह जाय रकम अधूरी ।
जाने को दिल नहीं करे पर जाता हूँ मजबूरी ॥

मैदान

मैं परसों ही आऊँगा जी, रकम सारी लाऊँगा जी ।
मगन तुम रहना प्यारी,
सेठानी लो मैं जाता हूँ, बाहर खड़ी सवारी ॥

दोहा—इतनी कह कर सेठजी, चले गये तत्काल ।
महलों से बाहर हुए, आगे सुनो अहवाल ॥

मूलावती दासी को हुक्म देती है

दोहा-दासी जल्दी आ इधर, छोड़ के सारा काम ।
पहिले लाओ बुलाय के, अच्छा सा हज्जाम ॥

चौबोला

अच्छा सा हज्जाम बुलाला सदर चौक में जाकर ।
पीछे काम महल का करना पहिले लाओ बुलाकर ॥
किस्मत लावे संग नाई से कह देना समझाकर ।
चलते हों औजार पेश्तर देना उसे जिताकर ॥

मैदान

तू दासी अभी चली जा जी, देख फिर बने नतीजा जी ।

देर बिल्कुल मत करना,
हो जावेगी देर जरा भी रंज पड़े फिर भरना ॥

जवाब दासी का सेठानी से

क्या करेगा नाई आकर, नाई का क्या काम है ।
क्या बने किसको हजामत, सोच लो अंजाम है ॥

जवाब सेठानी का

बस न ज्यादा बक चली जा, हुक्म को टाले मती ।
याद रखना बदके संग में, फिर तेरी बिगड़े गती ॥

दासी का शेर

लो अभी जाती हूँ मैं नाराज सेठानी न हो ।
माफ कीजे मेरे ऊपर ये महरबानी न हो ॥

दासी का नाई से शेर

आओ ठाकुर इधर को अब किधर को जा रहे ।
सेठजी के महल में तुमको अभी बुलवा रहे ॥

नाई का

चलिये दासी जी महल को नाई भी तैयार है ।
सेठ के कामों में बंदा हर घड़ी खुशहार है ॥

महल में नाई का आना और सेठानी का कहना (शेर)

आ इधर हज्जाम ये भी काम है उपकार का ।

मूँड दे तू सर अभी अच्छी तरह इस नार का ॥
कर लिया सन्यास धारण बोझ उतरे भार का ।
मोह ममता छोड़ कर अब त्याग है संसार का ॥

सेठानी का सती से (शेर)

बैठ जा आगे को चपला क्या लटा छिटका रही ।
साफ करवादो इन्हें जंजाल में क्यों आ रही ॥
अब छबी जोबन की तू बतला किसे दिखला रही ।
त्याग दे इस राग को तप हेत बनको जा रही ॥

गजल तर्ज—बीरा-वीर

नेम कर के अपने हिरदे बैठ जाती है सती ।
चुपके चुपके सर मुंडावे धन्य हो तेरी मती ॥
नाई ने सर खूब घोटा बाल ना छोड़े रती ।
हुक्म फिर दासी को देती है खड़ी मूलावती ॥
लोह की जंजीर तुम अन्दर से अब लाओ निकाल ।
अब जरा गहने सजा कर के सुधारूँगी गती ॥
याद तो करती रहेगी मैं सती बन कर रही ।
सेठ भी अपने को कहते हैं कि हम पूरे जती ॥
लाके दासी ने धरी उस लोहे की जंजीर को ।
हाथ पैरों और कमर से बाँधती मूलावती ॥

जा बजा ताले लगाये लोहे की जंजीर में ।
फिर कहा चंदना सती से अब कहाँ तेरे पती ॥

पहली दासी से सेठानी (शेर)

सेठ से दासी अगर तूने जिकर कुछ भी किया ।
याद कर लेना कि सर को काट कर ही धर लिया ॥

दासी का जवाब

मुझको क्या मतलब है जो मैं सेठ से कहती फिरूँ ।
जिन्दगी भर दुःख मैं कह करके फिर सहती फिरूँ ॥

सेठानी का जवाब चंदनवाला से
गजल तर्ज—वीरा वीरा

सच्ची सीता तू भी कहदे क्या सिखावे यार को ।
भूल ना जाना हमारी संटियों की मार को ॥
जब तो दिन दिन खाय थी छुलकों का भोजन तू सती ।
अब तो वो भी ना मिलेगा भूल जा आहार को ॥
आगे आगे चल हमारे मार खैंचूंगी तुझे ।
आज तहखाने के अन्दर देखना दिलदार को ॥
जितना तरसाया है मुझ का खूब तरसाऊँगी मैं ।
क्या बकाया छोड़ दूंगी अब निकालूं खार को ॥

जवाब चंदनबाला का सेठानी से
गजल तर्ज—बीरा वीरा

हुक्म जो हो आपका माता मुझे मंजूर है।
फर्क हो सकता नहीं ये धर्म का दस्तूर है॥
खून क्षत्राणी का है ये कष्ट से डरती नहीं।
आह संकट में करे वो नीतियों से दूर है॥
कर्म जो जैसे किये हैं भोगने सारे पड़ें।
भाग जब होता उदय तब सुक्ख भी भरपूर है॥
अब तो जाता है किशन सेवा करेगा वीर की।
ग्राम चाँदनपुर की महिमा जगत में मशहूर है॥

रंगाचार

दोहा—चंदनबाला सती को, सेठानी ले साथ।
तहखाने को ले चलीं, कसकर पकड़ा हाथ॥

तर्ज—राधेश्याम

कर पकड़ के चंदनबाला का धक्के देकर ले जाती थी।
भगवान अंधेरे कोठे में अवला को जा बैठाती थी॥

मूला कहती है तर्ज—राधेश्याम

देखूं अब कौन निकालेगा खाना तू कैसे खावेगी।
तू बड़ी भगतनी बनी हुई अब किसका ध्यान लगावेगी॥
पानी को भी तरसा दूंगी चुल्लूभर तुझे न प्याऊँगी।
चाहे तू इसमें मर जावे मैं जरा तरस न खाऊँगी॥

चंदनवाला का विलाप (सोहनी)

आज मैं किसको सुनाऊँ इस बिपत के हाल की।
कौन अब धीरज बंधावें कष्ट में इस बाल की॥
वो समय भी था कि माता ने खिलाया गोद में।
प्यार से पाला हमें दिलो जान से प्रतिपाल की॥
वस्त्र और गहने भी पहराये बड़े होकर मगन।
कुछ कमी मेरे पिता जी के नहीं थी माल की॥
न्हाने खाने और पीने की कमी कुछ भी न थी।
बैठने को भी सवारी रथ मझौली पालकी॥
एक पल भर को जुदा करते न थे माता पिता।
आज ये बिगड़ी दशा कैसी मेरे इकबाल की॥
कर्म के कर्तव हमारे क्या उदय पिछले हुए।
वक्त पर नहाना न खाना है घड़ी जंजाल की॥
क्या किशन अफ़सोस करना है हमें उपसर्ग में।
मिट नहीं सकती लिखी इस कर्म गति के चाल की॥

प्रार्थना चन्दनवाला की सोहनी

आज संकट में धर्म के धीर धारी हो कहाँ।
किस तरह अबला तड़फती न्यायकारी हो कहाँ॥
धीर के धारी तुम्हारी आस मुझको है बड़ी।

ऐसे संकट में दुखारी के सुखारी हो कहां।
मैं ने ग्रन्थों में सुना है आप संकट काटते।
फिर हमारी बार ये स्वामी अवारी हो कहां॥
बाट अब क्यों कर दिखाते नाथ अबला के लिये।
दम निकलने पर किशन फिर जय तुम्हारी हो कहां॥

आकाश वाणी होती है

सोहनी

मन में संशय मत करे कष्ट सारा दूर हो।
दर्श दें महावीर स्वामी प्रार्थना मंजूर हो॥
धर्म को अपने सतो इस में मत त्यागना।
भाग अब होगा उदय सतधर्म का ही नूर हो॥
ध्यान कर भगवान का हिरदे में धीरज धारलो।
अब कोई छिन में सती तुझको सुख भरपूर हो॥
जिस तरह चंदना सती पाला है तैंने धर्म को।
धर्म में हानी न हो फिर क्यों किशन मजबूर हो॥

रंगाचार

दोहा—दो दिन बीते सती को, अन्न मिला न नीर।
बिथा तीसरे रोज की, सुनो सकल धर धीर॥

तर्ज—राधेश्याम

धीरज धर कर चरित्र सुनो कुछ प्रेम हृयदमें धारोजी।

हित चित से मिलकर एकबार जयजय महावीर पुकारोजी ॥
अब सेठ महल में आवेंगे सेठानी से बतलावेंगे ।
चंदना सती को पूछेंगे मन में अपने घबड़ावेंगे ॥
लो उधर सेठ जी आ पहुँचे है इनकी उम्र बड़ी भारी ।
कहे किशन ध्यान से ज्ञान सुनो कृपाकरके नर अरु नारी ॥

सेठ जी का जवाब सेठानी से

दोहा—सेठानी जी महल की, सभी कहो कुशलात ।
ये कैसी सुनसान है, हुई नई क्या बात ॥

तर्ज—राधेश्याम

क्या नई बात है महलों में जो आज उदासी छाई है ।
चहरा सेठनी सुस्त तेरा देता आज दिखाई है ॥
मैं बहुत देर से देख रहा क्या पड़ा रात को पाला है ।
दासी भी चुपकी बैठी है ना दीखे चंदनबाला है ॥
क्या कारण है सेठानी जी जो ऐसी आज उदासी है ।
सबकुशल सुनाओ तुम प्यारी तबियत तो तेरी खासी है ॥

जवाब सेठानी का

दोहा—महलों में सब हैं खुशी, कृपा आपकी नाथ ।
दर्शन करके आपके, पुलकित हो गया गात ॥

तर्ज—राधेश्याम

होगई देखकर मगन तुम्हें महलों में कदम धरा आकर ।

ये भी निश्चय है नाथ सिद्ध सब काम हुए होंगे जाकर ॥
इतनी तो बात जरूरी है दिल बिना आपके लगे नहीं।
जबतक दर्शन मैं नहीं करूँ तबतक भय दिलका भगे नहीं॥
चंदनबाला की बाबत में जो पती आप फरमाते हैं।
वो कौन तरह से पूछ रहे ये नये अचम्भे आते हैं॥
मैं तुमसे पूछा चाहती थी वो चन्दनबाला कहाँ रही।
जब साथ आप ले गये नाथ फिर यहीं रही या वहाँ रही ॥
मैंने तो ये ही जाना था कोई महल अलग बनवाया है।
इसलिये सेठ लेगये साथ बाला को वहीं बसाया है॥

जवाब सेठजी का

दोहा—शोभा देते हैं नहीं, तुमको ऐसे वैन।
सुनकर कड़वे शब्द को, हुआ बहुत बेचैन॥

तर्ज—राधेश्याम

दिल होगया आज उदास मेरा सुनकर तेरी इस वाणीको।
फिर ऐसे शब्द नहीं कहना दुख होता मेरे प्राणी को॥

जवाब सेठानी का (तर्ज—राधेश्याम)

कहने में नहीं इजारा है जब उस विन नहीं गुजारा है।
अव्वल से वही सहारा है तो कौन कसूर हमारा है॥

सेठजी

सेठानी मुझको पता नहीं तुम बात कौनसी करती हो।
कहते में ना शरमाती हो और मन में भी ना डरती हो॥

सेठानी

जब साथ आप लेगये नाथ फिर कहने में क्या डरना है।
फिर भी आकर हमसे पूछो इंसाफ कौनसा करना है॥

सेठजी

क्या कारण था लेजाने का जो उसे साथ ले जाता मैं।
लेजाता गर मैं साथ उसे तुमसे क्या बात छुपाता मैं॥
क्या आपके मनमें पाप भी है जो ऐसो बात बनाती हो।
तुम सेठानी जी कहने में कुछ लज्जा भी ना खाती हो॥
हिरदे से पाप दूर कीजे ये मिथ्या गड़बड़ झाला है।
अब सच्च बतओ कहाँ गई वो पुत्री चन्दनबाला है॥

सेठानी

पुत्री है या वो पतनी है अबला है या वो दासी है।
मालिकनी या नौकरनी है वो मेरे खून की प्यासी है॥
जब से तुम उसको लाये हो वो घर में नहीं बैठती है।
घर घर के धक्के खाती है कहने पर बड़ी ऐंठती है॥
तुम आते हो जब आती है तुम जाते हो वो टलती है।
क्या खबर हमें वो किस किसके घर-घरमें जाकर फिरती है॥
कभी काम हमारा ना करती वो करती टहल तुम्हारी है।
तिल धरे देख हमसे जलती वो बाला सौत हमारी है॥

अब तुम जानो या वो जाने मुझको कोई दरकार नहीं।
मतलब तो मेरा तुमसे है मैं उसकी चौकीदार नहीं॥
तुम फिरो ढूंढ़ते घर-घर में मैं जाती अपने काम पती।
कुछ उसकी खबर नहीं मुझको वो कहाँ गई है सौत सती॥
दो दफा बुलावा आया है जाती हूँ मढ़े पुजावे में।
शादी में मुझको जाना है घर घर के आज बुलावे में॥

रंगाचार

दोहा—इतनी कह कर चल दई, सेठानी तत्काल।
इधर सेठजी पूछते, दासी से अहवाल॥

सेठ का दासी से

दोहा—दासी तू बतला मुझे, महलों की कुशलात।
चन्दनबाला है कहाँ, हमें सुनाओ बात॥

तर्ज राधेश्याम

कुशलात सुनादे महलों की ये कैसा घर में झगड़ा है।
सेठानी तो झुंझलाती है ये क्या फैलाया रगड़ा है॥
हर घड़ी यहां मौजूद रहो मालूम तुम्हें होगी सारी।
अव्वल से हाल कहो दासी है सोच मुझे इसका भारी॥

दासी का सेठ से

दोहा—इसकी बावत सेठ जी, मुझे खबर कुछ नाय।
हम तो घर की टहलनी, काम करें घर जाय॥

तर्ज—राधेश्याम

कुछ खबर सेठजी नहीं मुझे ये कैसा गड़बड़ झाला है।
ये तुम जानो या सेठानी या जाने चन्दनबाला है॥
मैं तो दासी नौकरानी हूँ और टहल आपकी करती हूँ।
झगड़े टंटों से काम नहीं मैं खुद झगड़ों से डरती हूँ॥

सेठ जी

बेरुखी बात क्यों करती है तुझ दासी को मालूम न हो।
अफसोस मुझे ये आता है तुम बच्ची भी मासूम नहो॥
दुनियां भर तू ने देखी है ये उम्र मुफ्त ना खोई है।
महलों में तू हर घड़ी रहे यहाँ तेरे सिवा ना कोई है॥
राजी से नहीं बतावेगी तो फिर पीछे पछतावेगी।
अपने टुकड़े से जावेगी और भारी कष्ट उठावेगी॥
पहले तो मार बजाऊँगा पीछे इलजाम लगाऊँगा।
पहनाकर हाथों में बेड़ी फिर थाने में पहुँचाऊँगा।
तुम दोनों ने ही मिलकर के चन्दनबाला को मारी है।
क्या कुए बावड़ी झेरे में ले जाकर उसको डारी है॥

जबाव दासी का सेठ से

दोहा—मैं कुछ कह सकती नहीं, महलों का अहवाल।
सेठानी मारे मुझे, बहुत करे बेहाल॥

तर्ज—राधेश्याम

बेहाल बदन का कर देगी टुकड़ों से मुझको खोते हो।
रहना मेरा दुश्वार हुआ ये रंजिस गहरी बोते हो ॥
इस वजह से ना कह सकती हूँ मरना मुझको मंजूर नहीं।
मैं टहल आपकी करती हूँ और किसी वक्त भी दूर नहीं ॥
अपने हाथों से सेठ मुझे चाहे जितना भी मारो तुम।
इस बारे में कुछ नहीं कहूँ जी चाहे आज निकारो तुम ॥

सेठ जी का

दोहा–दासी मत घबड़ाय तू, मैं हूँ जिम्मेदार।
तेरे ऊपर कुछ नहीं, आने दूंगा वार ॥

तर्ज—राधेश्याम

कोई घर से नहीं निकाल सके ना मेरे होते मार सके।
जब तक है दम में दम मेरा कहना कोई ना टार सके ॥
सेठानी अगर निकालेगी खर्चा फिर तुझे जरूर मिले।
चंदनबाला के मिलने पर इनाम तुझे भरपूर मिले ॥
वो बेटी मेरी धर्म की है मैं दिल से नहीं विसारूँगा।
मर जाय सब्र कर बैठूंगा जिन्दी पर तन धन वारूँगा ॥

जवाब दासी का सेठ जी से

दोहा–तीन वचन भर लीजिये, सेठ आज तत्काल।
अव्वल से आखीर तक, सभी सुनादूं हाल ॥

तर्ज—राधेश्याम

मैं हाल सुनाऊँगी सारा जब तीन वचन भरलोगे तुम।
इकरार खर्च के देने का मुझ से पहले कर लोगे तुम॥

सेठ जी का

दोहा—दासी तेरे सामने, वचन भरूँ मैं तीन।
सब सच्ची बातें कहो, मुझको होय यकीन॥

तर्ज—राधेश्याम

मुझको तेरा विश्वास भी है सेठानी का इतवार नहीं।
तू वहुत पुरानी दासी है कुछ तेरा मुझ को खार नहीं॥

दासी का सेठ जी से

दोहा—हाल कहूँ उमड़े हिया, भर भर आवे नीर।
सेठ आप कुछ मत सुनो, दिल होगा दिलगीर॥

चौवोला

दिल होगा दिलगीर नीर भर भर आँखों में आवे।
देख सती की गती कलेजे पत्थर के फट जावें॥
जितना कष्ट सहा है उसने कहते दिल घबड़ावे।
हाल मती पूछो चंदना का चलो तुम्हें दिखलावें॥

मैदान

आपका कच्चा दिल है जी, फिर होना पड़े विकल है जी।
पेश्तर उसे दिखाऊं,
चलकर वंधन काटो उसके पीछे हाल सुनाऊं॥

सेठ का दासी से

दोहा—दासी थोड़ा सा मुझे, सुना विपत का हाल ।
चलती चल आगे मेरे, दिखा उसे तत्काल ॥

चौबोला

दिखा मुझे तत्काल कहाँ है बेटी चंदनबाला ।
तीन रोज के अन्दर तुमने क्या झगड़ा कर डाला ॥
ऐसी होती खबर तो मैं हरगिज ना जाने वाला ।
मैं तो जाने था बाला की सभी करें प्रतिपाला ॥

मैदान

हाय क्या कष्ट पड़ा है जी, मुझ दुख हुआ बड़ा है जी ।
अगर ना जिन्दी पाऊँ
धर्म धारणी सती चन्दना फिर मैं भी मर जाऊँ ॥

दासी का सेठ जी से

दोहा—जिस दिन से वो सेठजी, आई अबला नार ।
सेठानी बिन बात को, रोज लगाती मार ॥

चौबोला

रोज लगाती मार मार अबला की खाल उड़ाई ।
खारी नमक डाल कर जौ की छानस रोज खवाई ॥
एक वक्त का भोजन खाकर इतनी भरी तवाई ।
कभी सामना नहीं किया ना तुमसे करी बुराई ॥

मैदान

भजन को कभी ना छोड़ा जी, कामसे मुख ना मोड़ाजी।
धन्य है उसकी माया,
तीन रोज से बेचारी ने अन्न जल कुछ ना खाया ॥

सेठ जी

दोहा—दासी जल्दी तू मुझे, ले चल उसके पास।
तीन रोज में सती का, बड़ा हुआ उपवास ॥

चौबोला

हुआ बड़ा उपवास तीन दिन मिला अन्न ना पानी।
कौन तरह से बच रही होगी वो उसकी जिंदगानी ॥
जो भूखी मर गई सती तो ये भी पाप निशानी।
श्राप लगेगा मुझे बड़ी हो जाय धर्म की हानी ॥

मैदान

हाय क्या कष्ट पड़ा है जी, मुझे दुख हुआ बड़ा है जी।
अगर ना जिन्दी पाऊँ,
धर्म धारणी सती चंदना फिर मैं भी मर जाऊँ ॥

दासी का

दोहा—वो देखो अन्दर पड़ी, सती चन्दना नार।
सेठ जरा आगे चलो, देखो नजर पसार ॥

चौबोला

देखो नजर पसार सामने पड़ी है चन्दनबाला।

लोहे की जंजीरों से ये बदन बाँध कर डाला ॥
नाई से सिर को मुंडवाया कैसा कीना चाला ।
नहीं पिछान सकोगे ऐसा रूप किया बिकराला ॥

मैदान

सेठजी अन्दर आओ जी, गोद में इसे उठाओ जी ।
बड़ी बे सुर्त पड़ी है,
सांस अभी ले रही जने क्या अच्छी आई घड़ी है ॥

चन्दनबाला का बेहोशी में कहना (सोहनी)

हे प्रभू कौन कर्म गत मेरी, मोकूं अन्न मिले ना नीर ॥टेक
तीन दिना लंघनको बीतेजी;मेरे ही कारण भये हैं फजीतेजी
सब उपसर्ग धर्म ने जीते, तुम्हीं बंधाओ धीर ॥१॥
माता पिता छोड़ कर धायेजी, राजपाट सब खाक मिलायेजी
बड़े कर्म ने खेल खिलाये, संकट सहे शरीर ॥२॥
जो सबसे पहिले मर जातीजो, इतना कष्ट काहेको पातीजी ।
अब ना मेरी पार बसाती, मरूँ कलेजा चीर ॥ ३ ॥
अब मैं कैसे धीर बंधाऊँ जी उठा न जाय कहाँकूँ जाऊँ जी
धरनी फट जाय अभी समाऊँ, कष्ट हरो महावीर ॥४॥

रंगाचार

दोहा—सेठ बैन सुन सती के, काँप उठे एक वार ।
भोंरे की दीवार में, दीनी टक्कर मार ॥

चौबोला

दीनी टक्कर मार हाय की भर कर कूक मचाई।
रो रो कर आँखों से जब पानी की धार बहाई॥
उठ उठ गिर गिर पड़े ज़मी पर बीसों पटकी खाई।
हाय हाय कर जभी सती को अपनी गोद उठाई॥

मैदान

साँस बाकी था कोई जी, देख दासी भी रोई जी।
गोद में सेठ उठा कर,
किशनलाल ये कहे कथा को सुनिये ध्यान लगाकर॥

रंगाचार

दोहा—उठा गोद में सती को, लाये सेठ निकाल।
अपने ही दालान में, लिटा दई तत्काल॥

सेठ जी चन्दनबाला से हाल पूछ रहे हैं

गजल

सती चन्दना तू पलक तो उठा दे।
ज़रा दर्द दिल का मुझे भी सुना दे॥ टेक
खबर आज पाई मुसीबत की मैंने।
सुना कर ज़रा आग दिल की बुझा दे॥ १॥
तुझे मार मूलावती ने लगाई।
कहाँ पर लगी चोट कुछ तो बता दे॥ २॥

अगर मूर्छा से सती तू ना जागी।
तो फिर सेठ का तन ठिकाने लगा दे ॥ ३ ॥
कहाँ केश सर के गये तेरे बाला।
बता कर इशारे से दुविधा मिटा दे ॥ ४ ॥
तुझे जो सताया है जिस बेरहमन ने।
वो अरमान भगवान् उसका मिटा दे ॥ ५ ॥
जो निर्दोष को दोष कोई लगावे।
उसे पाप उसका नरक में विठा दे ॥ ६ ॥
कहाँ हाथ में की गई तेरी माला।
जरा मन्त्र नवकार का तो सुना दे ॥ ७ ॥
किशनचन्द आनन्द होंगे जरूरी।
महावीर नैया किनारे लगादे ॥ ८ ॥

प्रार्थना सेठ की

नाथ अब मुझको बचाओ पाप से।
चन्दनवाला सती के श्राप से ॥
मोल में लाया प्रभू वाजार से।
कंचनी के वच गई व्यवहार से ॥
पाप की मेरी नजर कुछ हो अगर।

नाथ नरकों में फिरूँ मैं दर बदर ॥
धर्म की सेवक इसे पहचान कर ।
साथ लाया नाथ पुत्री मान कर ॥
मेरी सेठानी ने इज्जत ख्वार की ।
मैं बुराई अब सहूँ संसार की ॥
हो अगर इंसाफ करना प्रभू ।
साथ में मेरा भी हो मरना प्रभू ।
नाथ कुछ महिमा दिखानी हो अगर ।
तो सती की वेग ही लीजे खबर ॥
अब किशन की भी यही फरियाद है ।
धर्म का धारी न हो बरबाद है ॥

जवाब सेठजी का दासी से

दोहा—दासी देख रसोई से, लाओ कुछ आहार ।
ठंडासा जल छानकर, जल्दी करो तैयार ॥

चौबोला

जल्दी करो तय्यार प्यास ने जुवाँ एंठ डारी है ।
हुचकी लेकर जीभ निकाले प्यास लगी भारी है ॥
थोड़ा सा भोजन ला जल्दी भूखी को मारी है ।
ना जाने जिन्दी हो जावे अबला बेचारी है ॥

मैदान

हाथ भी हिला रही है जी, जबाँ को चला रही है जो।
पलक थोड़ा सा खोले,
जरा नीर से धीर बंधेगी निश्चय उठ कर बोले ॥

दासी का

दोहा—ताला बंद रसोई का, बाहर बरतन नाय।
छाज धरा है सती का, जिसमें भोजन खाय ॥

चौबोला

वही धरा है छाज कि जिसमें नित ये भोजन खाती।
वही थाल और यही तसतरी इसमें रोज खुलाती।
बिन बर्तन चुल्लू से पानी पीकर पर्ण निभाती।
कितना ही सह लिया कष्ट पर तुमको नहीं सुनाती।

सेठजी मैदान

जरा ये तो बतलाओ जी, नीर फिर कैसे प्याओ जी।
बिला बरतन क्या करना
इस बेचारी अबला को तो पड़ा विपत का भरना ॥

दासी की गजल

छाज में सेठ छुलके पड़े हैं, दाने उड़दों के उबले धरे हैं।
इसको देती थी ये ही बना कर।
पेट भरती ये बेचारी खाकर ॥

कुछ न सूखे अभी तो हरे हैं।
दाने उड़दों के उबले धरे हैं॥
या कभी जौ की छानस बनाती।
भात उनका उबाला खिलाती॥
मन के चाहे सभी कुछ करे हैं।
दाने उड़दों के उबले धरे हैं॥
अब तो इन ही को आगे धरो तुम।
रोज खाती न दुविधा करो तुम॥
ये मुलायम तो अब तक बड़े हैं।
दाने उड़दों के उबले धरे हैं॥
ये लो फटका जरा सा लगालूं।
इनके छुकले अलहदा निकालूं॥
ऐसे दाने ना ज्यादा कड़े हैं।
छाज में सेठ छुलके पड़े हैं॥
सेठ लाओ लुहार बुलाकर।
काटे लोहे की जंजीर आकर॥
हाथ जोड़े किशन ही खड़े हैं।
छाज में सेठ छुलके पड़े हैं॥

सेठ का वियोग तर्ज—वीरा वीरा

पड़ गया बाला निराला गहरा फन्दा कर्म का ।
धन्य जो तू ने न छोड़ा गह के पल्ला धर्म का ॥
कष्ट दिन दिन सह चुकी मुझसे कही न एक बार ॥
आज आखीरी सुना दे हाल बेटी मर्म का ।१।
ये तो मैं भी जानता हूँ तेरा बचना है कठिन ।
आज मुख होना है काला सेठ मुझ बेशर्म का ॥२
जो इशारे से भी कुछ कह जायगी चंदन सती ।
हो किशन मंजूर वोही पर्ण है जिन धर्म का ॥३

सेठ का दासी से

दोहा—दासी अभी लुहार को, लाता हूँ मैं बोल ।
आते ही जंजीर के, ताले देगा खोल ॥

चौबोला

तुम थोड़ा सा नीर पिलाना सती पलक जो खोले ।
पहले दाने इसे चबाना धरे उड़द के छोले ॥
मिस्त्री जा को लाऊं बुलाकर वो हैं सब में मोले ।
आते ही जंजीर काट दें फिरें महर के झोले ॥

मैदान

साथ कुछ खाना लाऊंजी, सामने इसे खुलाऊंजी ।

देर ना जरा लगाऊँ,
हवा करे जाना पंखे से अभी लौटकर आऊँ ॥

कविका

दोहा—सेठ महल से चल दिये, करते जाँय विचार।
दासी अपने काम को, वहाँ से गई सिधार ॥

चंदनवाला की प्रार्थना

इधर कृपा भगवान की, हुई सती होशियार।
इधर उधर को देखकर; बोली वचन उचार ॥
धन्य हो महावीरस्वामी धन्य हो अति वीरजी।
धन्य हो वर्द्धमान जय जय वीर सन्मत वीरजी ॥टेक
धन्य हो मूलावती माता जी तुम को धन्य हो।
तीसरे दिन आज जो आहार की तदबीर जो।१।
पारना मेरा कराने का फिकर तुमने किया।
धन्य मेरे भाग माता जो हरी मम पीर जो।२।
अब तो ये आहार जब ही पायगी चंदन सती।
आयेंगे कोई मुनिश्वर मुझ सती के तीर जो।३
मैं उन्हें आहार देकर दर्श पहले पाऊँगी।
खाउंगी भोजन तभी येही पर्ण आखीर जो।४।

जब तलक जल भी न पीउँ जानकी परवा नहीं।
धर्म ना त्यागो किशन सोने की है जंजीर जो ।५।

(भगवान् महावीर की अहार के लिये तय्यारी और अटपटी आखिड़ी)

दोहा—इधर श्री महावीर जी, लई प्रतिज्ञा धार।
इस भाँति जो विधि बने, करें आज आहार ॥

सोहनी

आज हम पायेंगे भोजन बस इसी तदवीर से ॥
जो बंधी अबला सती हो लोहे की जंजीर से ॥टेक
आप हो राजा की बेटी और न हों माता पिता।
आप हो राजा की वेटी और न हों माता पिता।
केश भी सर के मुंडे हों उसके वे तकसीर से ॥१॥
कुछ न हो जेवर वदन में वस्त्र भी बस एक हो।
सूप में छिलके सहित हो उड़द उबले नीर से ॥२॥
एक पग चौखट के अंदर एक हो बाहर धरा।
नीर हों नैनों से जारी प्रेम की तासीर से ॥३॥
तीन दिन का पारना जिन धर्म की धारक भी हो।
प्रेम भी कुछ हो किशन महावीर की तसवीर से ॥५॥

कव्चिका

दोहा—लेकर इतनी अटपटी, उठे श्री महावीर।
धीरे धीरे आ रहे, उसी महल के तीर

दरवाजे पर आ गये, महावीर भगवान।
अवला ने दर्शन किये, आई तन में जान।

गजल

वीर के दर्श कर अवला मगन मन में हुई भारी।
झपट कर आई चौखट पर खड़ी उस भाँति वेचारी।
कहा महावीर स्वामी से तिष्ठो तिष्ठो श्री भगवन्!
शुद्ध आहार पालीजे धन्य हो वाल ब्रह्मचारी॥
उसी दम फिर चले स्वामी न देखा नेत्र में पानी।
एक ये ही न विध पाई और तो मिल गई सारी॥
नजर से देखकर अवला कि उलटे चल पड़े स्वामी।
किशन चंदना सती के नैन से पानी हुआ जारी॥

शील की महिमा रंगाचार

दोहा—फिर कर देखा नाथ ने वहे नैन से नीर।
आप खड़े फिर हो गये, दयावान् महावीर॥

चौबोला

खड़े हुए महावीर प्रभु अपनी दिखलावें माया।
सती चंदनवाला का क्या सुन्दर रूप वनाया॥
लोहे की जंजीरों का सुवर्ण गहना करवाया।
सर के केश हुए अति लम्बे वढ़िया वस्त्र पिन्हाया।

मैदान

सूफ का थाल बनाया जी, शुद्ध भोजन सब पाया जी।
बड़ी महिमा दिखलाई,
देख सतीं चंदनबाला को इन्द्रानी शरमाई ॥

रंगाचार

दोहा—धन्य वीर भगवान् को, प्रेम से लिया आहार।
देव स्वर्ग में बोलते, मिलकर जय जयकार ॥

चौबोला

जय जयकारे हुवे स्वर्ग में प्रभू आहार लिया है।
पंच रत्न की वर्षा होती सुवर्ण महल किया है॥
इधर सती चंदनबाला का सब दुख टार दिया है।
बड़े प्रेम से वीर प्रभू का गुण उपदेश पिया है।

मैदान

दर्श सब ही ने पाये जी, सेठ धनवाहा आये जी।
सोच हिरदे में भारी,
किस कारण से दरवाजे पर खड़े बहुत नर नारी।

पद आहार के समय पर

वीर लेने को आये आहार, मनाओ मिल खुशियां।टेक
धन्य घड़ी शुभ ऐसी आई, बगल में पीछी वेग दबाई।
हाथ कमण्डल धार। मनाओ० १।
जैन दिगम्बर मूरति प्यारी, आ र ही नाथ बालब्रह्मचारी।
संग में श्रावक दो चार। मनाओ० २।
चलकर धनवाहा घर आये, निर्खत जय जयकार मनाये।
सतो चंदन के द्वार। मनाओ० ३

देख सती वेगी उठ धाई, एक विधि प्रभू ने कम पाई ।
माया रची है अपार । मनाओ० ४
वीर प्रभू उलटे ही धाये, नीर प्रेम के तुरत बहाये ।
वीर आये हैं वापिस उधार ॥ मनाओ० ५ ।
प्रगट भया शृङ्गार सती का, भेद न पाया कर्मगती का ।
वस्त्राभूषण धार । मनाओ० ६ ।
सर के केश भये अति सुन्दर, शोभा रची महल के अन्दर ।
जयजय करें नर नार ॥ मनाओ० ७ ।
भोजन प्रगट भया अतिनीका, सुन्दर होगया रूप सतीका ।
कर सुवर्ण का थार । मनाओ० ८ ।
स्वामी का पड़गाहन कीना, सुफलसती का होगया जीना ।
या विधि भयो अहार । मनाओ० ९ ।
किशन करत दर्शन हर्षाये, मिलकर जयजयकार मनाये ।
इत आ गये सेठ लुहार । मनाओ० १० ।

अब सेठ जी और लुहार आ पहुँचे

दोहा—देख सेठ घबड़ा गये, कैसी है ये भीर ।
नर नारी आकर खड़े, दर्वाजे के तीर ॥

तर्ज—राधेश्याम

दरवाजे पर क्यों भीर लगी यह किसके जयजयकारे हैं ।
हज्जूम यहाँ पर लगा हुवा यह कैसे आज नजारे हैं ॥
आगे आगे आ रहे सेठ जोकर मिस्त्री भी आते हैं ।
नजदीक महल के जब आये श्री वीरके दर्शन पाते हैं ॥

जब देख दिगम्बर मूरतको चरणों में शीश झुकाते हैं ।
अब इधर किशन और मामचंद कुछ प्रेम भावसे गाते हैं ।।

महावीर भक्ती

दोहा—नाथ खड़े जब तक रहे, दरवाजे के पास ।
तब तक सारे नग्र की, पूर्ण होगई आस ।।

तर्ज—राधेश्याम

आशा पूरण सब की होती जो भी दर्शन कर जाता है ।
जय २ की ध्वनी गूंजती थी कोई जाता है कोई आता है ।।
दर्शन हुए सारी नगरी को एक मूलावती ना आई थी ।
गर आई तो पीछे आई दर्शन करने ना पाई थी ।।
कर गये विहार महावीर प्रभू आपस में प्रेम बढ़ाकर के ।
आगेकी कथा सुनाता हूँ अब सुनलो ध्यान लगाकर के ।।
महावीर के सेवक किशन जैन देहली में कथ कर गाते हैं ।
जिस कथाको सेवक समझाकर भक्तों को आज सुनाते हैं ।।
दोहा—महावीर भगवान ने, या विधि लियो अहार ।
उसी समय पर कर गये, कृपा नाथ विहार ।।

तर्ज—राधेश्याम

जब नाथ ने वेग विहार किया तब वो सेठानी आई है ।
चंदनवाला की शान देख मन में भारी पछताई है ।।

वचन मूलावती के

मुझ निभागन का भाग बुरा जो दर्शन भी ना पाये हैं ।
चंदनवाला के धन्य भाग जो वीर प्रभु खुद आये हैं ।।

फौरन ही चर्ण लिये जाकर चंदनवाला से बतलाई।
कर जोड़ के आगे खड़ी हुई नैनों में आँसू भरलाई॥
बेटी सब खता माफ करदो वह ग़लती मेरी भारी थी।
मैं महा दुष्टनी पापिन हूं जो तुम्हें कष्ट में डारी थी॥

चन्दनबाला का माता से

दोहा–माताजी कुछ आपने, कष्ट दिया नहीं मोय।
निज कर्मों के भोग हैं, बुरा न जग में कोय॥

तर्ज—राधेश्याम

यह आपकी सारी महिमा ने प्रभू का दर्श कराया है।
सब ही प्रताप आपका है जस यही आपका छाया है॥
उपदेश आपका सच्चा है और सच्चा प्रेम तुम्हारा है।
माताजी आपकी आत्माने मुझको ही आज उभारा है॥
माता तुम सच्ची माता हो यह पिता धर्म के मेरे हैं॥
यूं तो घर घर में माता हैं पर पिता नहीं बहुतेरे हैं॥
अब दोनों से यह अर्ज मेरी दिक्षा मुझको दिलवादीजे।
आखीरी धर्म कमा लीजे अहसान बड़ा मुझ पर कीजे॥

सेठ का जवाब सती से

दोहा–वचन सतीजी के सुने, बोले सेठ महान।
बेटी ऐसी मत कहो, कहाँ आपका ध्यान॥

राधेश्याम

मेरा तो और विचार ही है शादी अब तेरी रचाऊँगा।
क्रोड़ों की संपति जो मेरी सब तेरे नाम लिखाऊँगा॥
कोई सज्जन पुरुष तलाश करूँ भक्तों से भक्त मिलाऊँगा।

यह मालमता जितना भी है सब मालिक तुम्हें बनाऊँगा ॥

दोहा—पिता न ऐसा सोचिये, अच्छा नहीं विचार ।
दिक्षा लेनी है मुझे, करिये नहीं अवार ।

तर्ज—राधेश्याम

दिक्षा धारण करके अब तो जिनराज की शरना जाना है ।
क्या करना है जगमें रहकर अबतो कुछ धर्म कमाना है ।
इसलिए कृपा करके जल्दी दिक्षा की कर तैयारी है ।
जितनी अब देर लगाते हो मुझको वो पलपल भारी है ।

कविका

दोहा—सेठानी और सेठ ने, बहुत लई समझाय ।
सती चदना को तभी दिक्षा दई दिवाय ।

तर्ज—राधेश्याम

दीक्षा लेकर जब त्यार भई नर नार सभी मिल आते हैं ।
दर्शन कर चंदनबाला के सब जयजयकार मनाते हैं ।
बस्ती से वेगि विहार किया और बनको सुर्त लगाई है ।
जा करी तपस्या बनो बीच तब ऊँची पदवी पाई है ॥
शिरोमणी आर्य का कहलाई उपदेश किया जिसने भारी ।
प्रभाव जगत में छाया था तपकी महिमा ही है न्यारी ॥
अब इधर सेठ धनवाहा के हिरदय वैराग समाया है ।
दिल पर यह असर पड़ा ऐसा कि झूंठी जगकी माया है ।
इस गृहस्थके बंधन में रहकर वृथा सब जग के धंधे हैं ।
माया में रहकर लुप्त सदा नर नार ममा के अंधे हैं ।

क्या करना है जग में रहकर हमको भी धर्म कमाना है।
ऐसा वैराग उत्पन्न हुआ अब दिक्षा लेकर जाना है॥

जवाब सेठ का सेठानी से

दोहा—सेठानीजी ध्यान से, सुनलो कान लगाय।
हृदय में वैरागता, मेरे गई समाय॥

तर्ज—राधेश्याम

दिक्षा अब मुझको लेनी है तप हेतु मुझे वन जाना है।
इसलिये आप अब मौजकरो बस इतना ही समझाना है॥

जवाब सेठानी का सेठ से

दोहा—दिक्षा तुम धारण करो, पहिले मैं तैयार।
मेरा यही विचार है, त्यागें सब घर बार॥

तर्ज—राधेश्याम

तुमसे पहिले तैयार हूँ मैं अब लौ मेरी भगवान में है।
जितनी सम्पति आपकी है सब मिट्टी के सामानमें है॥
दोनोंका यही विचार हुवा तो निश्चय यही उपाय किया।
जितना धनमाल खजाना था श्रीमंदिरजीके नाम किया॥

दोहा—दिक्षा ले दोनों चले, मचा नगर में शोर।
नर नारी सब नगर के, धन्य कहें कर जोर।

दासी का सेठ जी से

वस्ती के जितने नर नारी दर्शन करने को आते हैं।
दे देकर धन्यवाद सब ही जय जयके शब्द सुनाते हैं॥
वस्ती से तुरत बिहार किया जा पृथकर तप कीना है।
वनमें मुद्दत जा ध्यान किया और जन्म सुफल कर लीना है

फिर मुल्कोंमें उपदेश किया और धर्म प्रचार किया भारी।
धन्य धन्य उन पुरुषों को और धन्य धन्य मूला प्यारी ॥
तिरजाय काठके संग लोहा यह धर्म की महिमा न्यारी है।
जो गिरते गिरते संभल जाय ठोकर क्या करे विचारी है।
अबतक चाहे कुछनहीं बिगड़ा जो उसी मार्गपर आ जाओ।
आगे का कर्म सुधर जाये और नाम जगत में पा जाओ ॥
अपना कुछ यह उद्देश्य नहीं कि तुम भी दीक्षा लेजाओ।
कम से कम धर्म संभालो तुम बस ये ही शिक्षा लेजाओ ॥

दोहा—जितना भी जासे बने, साधन करो ज़रूर।
धर्म ध्यान और नियमको, करो न बिल्कुल दूर ॥

तर्ज़—राधेश्याम

आखीर नतीजा कहने का मित्रो बस यही हमारा है।
होगया पार भवसे वोही जिनराज हृदय जिनधारा है ॥
इसीलिए सभी माता बहनो सत्कार तुम्हें करना होगा।
व्रत नियम संयम जप तप और ध्यान वीर धरना होगा ॥
उत्तम दरजा है भगती का जो चलते रहो जमाने से ॥
भाई यों अब हिम्मत मत हारो करलो कुछ दुनियाँमें आकर
चौरासी चक्कर से बचकर मनुष्य जन्म लीना पाकर ॥
थोड़ा ही लिखना काफी है ज्यादा हो इसे समझ लेना।
ज्यादा कहना बेकार सभी इतना ही बस मुझको कहना।

दोहा—कहना सुना मुझ दास का करना माफ कसूर।
शब्द जोड़ कविता करी, कथना का घर दूर ॥

कविता का घर दूर वड़ा कविताई क्या कर सकता हूँ ।
कवियों की धूर समान नहीं फिर क्या मैं सरकर सकता हूँ ।
गलती की क्षमा जरूर करो कहना पड़ता कर जोड़के जी ।
मैं दास हूँ सबके चरणों का अरदास यही कर जोड़के जी

दोहा—सती चन्दना को हुए, कुल पच्चिस सौ साल ।
कुछ मुद्दत गुज़री नहीं लिखा है जिसका हाल ।

पता कवि का

दोहा—देहली शहर में गली धर्मपुरा सर नाम ।
नये दिगम्बर जैन के मन्दिर समीप मुकाम ॥
शुद्धताई के साथ में बूरा का है काम ।
फ़र्म नाम में लिख रहा किशन खचेड़ू नाम ॥

तर्ज—राधेश्याम

बेटे का नाम खचेड़ू मल आज्ञाकारी कहलाता है ।
है नाम पिताका किशनलाल जो कथना करके गाता है ।
उन्निस सौ साल सतासीमें देहली अनजल ले आया था ।
है जन्म जारचा छोटा सा जहाँ जन्म कवि ने पाया था ।
विक्रम उन्निस सौ चालीस में आसौज वदी आठें आई ॥
हुआ जन्म जैन सेवक का जभी यह मिती जन्म की वतलाई
मुसद्दीलाल स्वर्गीय के सुत किशन जैन कहलाते हैं ।
जो उन्निस सौ सत्ताणवें में कविता कर इसे छपाते हैं ॥

लेखक की उदारता

आज ता० १०-६-४६ दिन मंगलवार मिती भादवा सुदी १४ सं० २००२ वि० को श्री महीावरजी क्षेत्र में श्री दि० जैन पुस्तकालय लाला मंगलसैन जैन विशारद को इस पुस्तक चन्दनवाला चरित्र व सुखमाल चरित्र जो कि मेरा खुद का वनाया हुआ है, मैं आज छापने का अधिकार देता हूं जिससे जनता को धर्म लाभ हो।

द० किशनलाल